पंचग्रन्थ

अध्याय
दस

यूसुफ और इसके भाई

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2014 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इन्टरनेशनल., 316 लाईव ओक रोड़., कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 से लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या छात्रवृत्ति के प्रयोजनों के लिए संक्षिप्त टिप्पणियों को छोड़कर किसी भी रूप में या लाभ प्राप्ति के लिए किसी भी तरह से पुन:उत्पादित नहीं किया जा सकता है।

यदि कहीं और नहीं बताया गया तो पवित्रशास्त्र की सभी टिप्पणियाँ हिन्दी की पवित्र बाइबिल से ली गई हैं। 1973, 1978, 1984, 2011 अंतरराष्ट्रीय बाइबिल सोसायटी © सर्वाधिकार सुरक्षित। जानडरवॉन बाइबिल प्रकाशक की अनुमति के द्वारा प्रयुक्त किए गये हैं।

थर्ड मिलेनियम की मसीही सेवा के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मसीही सेवकाई एक लाभनिरपेक्ष मसीही संस्था है जो कि **मुफ्त में**, **पूरी दुनिया के लिये**, **बाइबल पर आधारित शिक्षा** मुहैया कराने के लिये समर्पित है। उचित, बाइबल पर आधारित, मसीही अगुवों के प्रशिक्षण हेतु दुनिया भर में बढ़ती मांग के जवाब में, हम सेमीनरी पाठ्यक्रम को विकसित करते हैं एवं बाँटते हैं, यह मुख्यतः उन मसीही अगुवों के लिये होती है जिनके पास प्रशिक्षण साधनों तक पहुँच नहीं होती है। दान देने वालों के आधार पर, प्रयोग करने में आसानी, मल्टीमीडिया सेमीनरी पाठ्यक्रम का 5 भाषाओं (अंग्रेजी, स्पैनिश, रूसी, मनडारिन चीनी और अरबी) में विकास कर, थर्ड मिलेनियम ने कम खर्च पर दुनिया भर में मसीही पासबानों एवं अगुवों को प्रशिक्षण देने का तरीका विकसित किया है। सभी अध्याय हमारे द्वारा ही लिखित, रुप-रेखांकित एवं तैयार किये गये हैं, और शैली एवं गुणवत्ता में द हिस्ट्री चैनल © के समान हैं। सजीवता के प्रयोग एवं शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट चलचित्र उत्पादन के लिये थर्ड मिलेनियम 2 टैली पुरस्कार जीत चुका है, और हमारा पाठ्यक्रम 192 भी ज्यादा देशों में प्रयोग हो रहा है। हमारी सामग्री डी.वी.डी, छपाई, इंटरनेट, उपग्रह द्वारा टेलीविज़न प्रसारण, रेडियो, और टेलीविज़न प्रसार का रूप लेते हैं।

हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार से उसमें शामिल हो सकते हैं, कृपया हमारी वैबसाइट http://thirdmill.org. पर जाएँ।

विषय-वस्तु सूची

I. परिचय 1

II. सरंचना एवं विषय-वस्तु 2

क. कुलपतियों में असामन्जस्यता 3
1. यूसुफ के विरोधी भाई 3
2. भाइयों ने यूसुफ को बेच दिया 4

ख. यूसुफ का कठोरता से भरा हुआ शासन 4
1. यहूदा का कनान में पाप करना 4
2. मिस्र में यूसुफ की सफलता 5

ग. मेल-मिलाप एवं पुनर्मिलन 6
1. पहली यात्रा 6
2. दूसरी यात्रा 7
3. तीसरी यात्रा 8

घ. यूसुफ का परोपकारिता से भरा हुआ शासन 9

ङ. कुलपतियों में सामंजस्यता 9
1. याकूब के द्वारा पारिवारिक प्रबन्ध 9
2. यूसुफ के द्वारा पारिवारिक प्रबन्ध 10

III. मुख्य विषय 11

क. साझे महत्व की बातें 11
1. इस्राएल के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह 12
2. इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा 12
3. इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीष 13
4. इस्राएल के द्वारा परमेश्वर की आशीष 14

ख. विशेष महत्व की बातें 14
1. जातीय एकता 15
2. जातीय विविधता 17

IV. सारांश 21

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

पंचग्रन्थ

अध्याय दस

कुलपति याकूब

परिचय

अधिक धन सम्पत्ति वाले परिवारों में सम्बन्धी अक्सर एक दूसरे के साथ संघर्ष करते हैं कि किसको विरासत का सबसे बड़ा हिस्सा प्राप्त होगा। जब समय सम्पत्ति को एक पीढ़ी से आगे वाली पीढ़ी में पारित करने का आता है, तो यहाँ तक वे भाई बहिन जो एक दूसरे को कभी बहुत ज्यादा प्यार करते थे इतने ज्यादा विभाजित हो जाते हैं कि केवल परमेश्वर ही उनके प्रेम के बन्धन को पुन: स्थापित कर सकता है। उत्पत्ति की पुस्तक हमें शिक्षा देती है कि ऐसे ही कुछ इस्राएल के कुलपतीय परिवार के, यूसुफ और इसके भाइयों के साथ हुआ था। उनके पिता, याकूब की विरासत के ऊपर उनकी प्रतिद्वन्द्वता इतनी ज्यादा बढ़ते, हुए कड़वी हो गई कि इसका समाधान करना असंभव सा हो गया। परन्तु जैसा कि आप इस अध्याय में देखेंगे, परमेश्वर ने यूसुफ और उसके भाइयों का मेल मिलाप और उनके प्रेम के बन्धन को पुन: स्थापित कर दिया। सम्पूर्ण पुराने नियम में इस्राएल के बारह गोत्रों के मध्य में सम्बन्ध बने रहने के लिए समाधान की जीवन गति को निर्मित कर दिया। और यह आज भी मसीह के अनुयायियों के सम्बन्धों में दिशा निर्देश देता है।

पंचग्रन्थ के ऊपर यह अध्याय उत्पत्ति की पुस्तक के उस हिस्से के लिए समर्पित है जो "यूसुफ और उसके भाइयों" का विवरण देता है। हम उत्पत्ति 37:2-50:26, जिसमें यूसुफ का उसके भाइयों के साथ बिगड़ा हुआ सम्बन्ध मिलता है, को कुछ विस्तार के साथ देखेंगे

इससे पहले की हम मुख्य विषय की ओर मुड़ें, यह सहायतापूर्ण होगा कि उत्पत्ति की पुस्तक की मूल विषय-वस्तु की समीक्षा कर ली जाए। अन्य अध्यायों में, हमने देखा कि उत्पत्ति की पुस्तक को तीन भागों में विभाजित किया गया है। इसका प्रत्येक भाग मूसा के मूल पाठकों को विशेष तरीकों से सम्बोधित करने के लिए रूपरेखित किया गया है। पहला भाग आदिकालीन इतिहास का विवरण देता है, जो कि उत्पत्ति 1:1-11:9 में पाया जाता है। हिस्से में, मूसा ने इस्राएलियों को दिखाया कि उनकी कनान की भूमि के लिए दी गई बुलाहट उस बात में स्थापित थी जिसे परमेश्वर ने संसार के इतिहास की आरम्भिक अवधियों में पूरा कर दिया था। दूसरा हिस्सा उत्पत्ति 11:10-37:1 में कुलपतीयकाल के इतिहास का विवरण देता है। यहाँ पर मूसा ने सम्बोधित किया है कि कैसे अब्राहम, इसहाक और याकूब के जीवन उन विषयों के लिए बोलते हैं जिन्हें इस्राएली प्रतिज्ञात् भूमि में अपने मार्गों में सामना करेंगे। और तीसरा हिस्सा, उत्तरोत्तर कुलपतीयकालीन इतिहास का उत्पत्ति 37:2-50:26 में पाया जाता है, जो यूसुफ और इसके भाइयों की कहानी को बताता है। हमारा अध्याय उत्पत्ति के इस अन्तिम हिस्से के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेगा।

जैसा कि हम देखेंगे, कि उत्पत्ति के इस भाग के प्रति मूसा का प्रयोजन उसके मूल पाठकों के लिए कई शिक्षा की बातों को सम्मिलित करता है। परन्तु सामान्य रूप में:

> **यूसुफ और इसके भाइयों की कहानी ने इस्राएल के गोत्रों को शिक्षा दी कि कैसे सद्भाव के साथ इकठ्ठे रहा जाता है जब वे प्रतिज्ञात् भूमि के ऊपर विजय पाने और इस में बसने की चुनौती की सामना करते हैं।**

यूसुफ और उसके भाइयों के ऊपर हमारा यह अध्याय दो मुख्य भागों में विभाजित होगा। प्रथम, हम इन अध्यायों की सरंचना और विषय-वस्तु की जाँच करेंगे, कि कैसे उनकी साहित्यिक रूपरेखा और विषय वस्तु एक साथ चलती है। दूसरा, हम कई मुख्य विषयों को देखेंगे जिन पर मूसा ने इस्राएल के गोत्रों के लिए जोर दिया और यह से आधुनिक मसीहियों के ऊपर लागू होते हैं। आइए उत्पत्ति के इस भाग की सरंचना और विषय वस्तु को देखते हुए आरम्भ करें।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

सरंचना एवं विषय-वस्तु

प्रत्येक जो यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी से परिचित है जानता है कि इसमें कई चरित्र, भिन्न संस्कृतियाँ ढांचा और कई पेचीदा उपकथाएँ सम्मिलित हैं। ये गुण इतने ज्यादा जटिल हैं कि विवरणों के साथ ही उलझ जाना बहुत आसान है और इसकी व्यापक साहित्यिक सरंचना से दृष्टि ही हट जाए, जो इन सबको इक्ट्ठा थामे रहती है। इस बात पर ध्यान देने के द्वारा कि कैसे इन अध्यायों की सरंचना और विषय वस्तु इक्ट्ठे मिल कर कार्य करते हैं विशेष रूप से बहुत ही महत्वपूर्ण है क्योंकि यूसुफ और उसके भाइयों का विवरण एक बहुत ही उच्च एकीकृत नाटक है।

मूसा का उत्पत्ति 37:2-50:26 का प्रस्तुतिकरण एक उच्च एकीकृत, पाँच-चरणीय अवस्था वाला नाटक है:

- उत्पत्ति 37:2-36 में, कहानी की आरम्भिक समस्या, यूसुफ के शासन की सम्भावना के ऊपर कुलपतीयकालीन असामन्जस्यता को दर्शाती है।
- दूसरा चरण, या उत्पत्ति 38:1-41:57 में कठोरता से भरे हुए कार्य, यूसुफ के दबाव से भरे हुए शासन – उसके मिस्र में सामर्थी होने के ऊपर केन्द्रित है।
- तीसरा चरण, उत्पत्ति 42:1-47:12 में, नाटक में एक निर्णायक मोड़ है। यह मिस्र में कुलपतियों के मेल-मिलाप और पुनर्मिलन का विवरण देता है।
- चौथा चरण, या 47:13-27 में नम्रता से किए गए कार्य में, यूसुफ के मिस्र में परोपकारिता से किए हुए शासन का विवरण देते हैं।
- और नाटक का अन्तिम प्रस्ताव, 47:28-50:26 में यूसुफ के शासन के अधीन कुलपतीयकालीन सद्भाव का विवरण देता है।

अभी वर्तमान के दशकों में, व्याख्याकारों की एक बड़ी गिनती ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि उत्पत्ति के ये अध्याय एक बड़े पैमाने पर व्यतिक्रम को निर्मित करती है। एक व्यतिक्रम:

एक ऐसी साहित्यिक संरचना जिसमें खण्ड एक मुख्य बात के पहले या पश्चात् आपस में एक दूसरे के प्रति समान्तर या सन्तुलन में रहते हैं।

बहुत से ये प्रयास इन दृष्टिकोणों को ऊपर बहुत ज्यादा जोर देते हैं। परन्तु वे एक विस्तृत-पैमाने पर नाटकीय सन्तुलन की ओर संकेत देते हैं जो यूसुफ और उसके भाइयों के मध्य में समरूपता को लेती है।

सामान्य रूप में, यह देखना कठिन नहीं है, कि विवरण कुलपतीयकाल की असामन्जस्यता के साथ आरम्भ होता है और कुलपतीयकालीन सद्भाव के साथ नाटक के अन्तिम समाधान के रूप में समाप्त होता है।

यूसुफ के मिस्र में शासन के समय कठोरता के साथ किए हुए कार्य मिस्र में यूसुफ के द्वारा परोपकारिता के शासन में नम्रता के साथ किए हुए कार्य के साथ सन्तुलन को निर्मत करते हैं। और नाटकीय मोड़, या चूल की बात – असामन्जस्यता और कठोरता से परोपकारिता और सद्भाव में – मेल मिलाप और पुनर्मिलन का परिवर्तन है जो कि मिस्र में घटित हुआ। हम इन वृतान्तों को उसी ही क्रम में देखेंगे जिसमें मूसा ने इन्हें प्रस्तुत किया है। परन्तु इस मूलभूत सन्तुलन की समझ हमें यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी के कई विवरणों की जाँच करने में सहायता करेगी।

यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी की विषय वस्तु उत्पत्ति के किसे भी अन्य हिस्से की अपेक्षा अधिक साहित्यिक जटिलता को प्रदर्शित करती है। इसमें पात्रों की एक लम्बी सूची है और यह इनमें से कइयों को त्रि-आयामी, परिवर्तित होते हुए पात्रों के रूप में प्रदर्शित करती है। दृश्यों को स्पष्टता से दिखाया गया है। विडंबना, हास्य और त्रासदी पूरी कहानी में प्रगट होती है। कथा बहुत सी अप्रत्याशित घटनाओं के मोड़ों को अपने में लिए हुए और अन्य घटनाओं के घटने की आशा करती है। इस प्रकार, उत्पत्ति के इस भाग ने मूल इस्राएलियों को जो कुछ हम इस अध्याय में संभावित खोज करेंगे उससे कहीं अधिक के ऊपर विचार करने के लिए बुलाहट दी होगी। इसलिए,

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

समय की कमी के कारण, हम स्वयं को प्रत्येक अध्याय की विषय वस्तु के ऊपर कुछ ही टिप्पणियों को देने तक सीमित रखेंगे।

कुलपतियों में असामन्जस्यता (उत्पत्ति 37:2-36)

मूसा ने अपनी कथा का आरम्भ उत्पत्ति 37:2-36 में यूसुफ के भविष्य में आने वाले शासन के ऊपर कुलपतीयकालीन असामन्जस्यता की नाटकीय समस्या के साथ आरम्भ किया। आरम्भिक अध्याय दो भागों से मिलकर निर्मित हुए हैं जो इक्ट्ठे यह दिखाते हैं कि कैसे यूसुफ के परिवार में समय के व्यतीत होने के साथ असामन्जस्यता बढ़ती चली गई। पहला भाग, 37:2-11 में, प्रदर्शित करता है कि कैसे यूसुफ ने तेजी से अपने भाइयों को विरोध के लिए उत्तेजित कर दिया। और दूसरा भाग, वचन 12-36 में हमें बताता है कि कैसे भाइयों ने यूसुफ को गुलामी के लिए में बेच दिया। आइए उस तरीके को देखें जिसमें यूसुफ ने अपने भाइयों को विरोध के लिए उत्तेजित कर दिया।

यूसुफ के विरोधी भाई

मूसा ने सबसे पहले यूसुफ को एक भोले-भाले जवान युवक के रूप में प्रस्तुत किया है जिसे उसके पिता की कृपा प्राप्त थी। उदाहरण के लिए, वचन 3 में, याकूब ने यूसुफ को एक रंगबिरंगा अंगरखा दिया जिसके कारण उसके भाई उससे ईर्ष्या करने लगे। वचन 4 हमें बताता है कि, "वे उससे बैर रखने लगे और उसके साथ ठीक से बात भी नहीं करते थे।" इसके पश्चात्, विषय को और अधिक बुरा बनाने के लिए, दो अतिरिक्त चित्रों के द्वारा, यूसुफ ने परिवार के ऊपर उसके लिए होने वाले सत्कार के विषय में अपने भविष्य के स्वप्न के बारे में घमण्ड किया। इसके कारण, दोनों अर्थात् वचन 5 और वचन 8 में, मूसा ने लिखा कि यूसुफ के भाइयों ने "उससे बहुत ज्यादा द्वेष" रखने लगे। और वचन 11 हमें बताता है कि, "उसके भाइयों उससे डाह करने लगे।"

> **यूसुफ और उसके भाइयों के मध्य में असामन्जस्यता का कारण...मैं दो बातों में देखता हूँ। एक वह जिसमें उसके पिता उसके लिए एक बहुत ही सुन्दर अंगरखा बनवाया, और वह अंगरखा, जिस पर अन्य भाइयों ने देखा और कहा, "मैं, मैं सोचता हूँ कि यह मेरा होना चाहिए, इसे मेरे पास होना चाहिए।" और जब हम स्वयं के ऊपर देखते हैं, हमारे पास असामन्जस्यता है यहाँ तक कि हमारे अपने समाज में क्योंकि कुछ लोग अच्छे जीवन को यापन कर रहे हैं और हम अन्यों के स्वयं से यह कहते हुए असमाजंस्यता को पाते हैं कि, "क्यों मैं दूसरे व्यक्ति के जैसा नहीं हूँ?" यहाँ तक कि *कलीसिया* जो हमारे पास है उसमें भी असामन्जस्यता है। हम किसी ऐसे को देखते हैं जो कि बीमार है और अन्य को जो कि स्वस्थ हैं, और हम स्वयं से कहते हैं कि, "क्यों हम स्वस्थ नहीं हैं?" इस कारण, यूसुफ को उत्तम वस्तु देना जबकि अन्यों के पास नहीं था, ने कुछ सीमा तक असामन्जस्यता को उत्पन्न किया। दूसरी बात: मनुष्य के स्वभाव की दुष्टता। भाइयों में ईर्ष्या आ गई, और क्योंकि उसके भाई के पास, आप जानते हैं, कि उनसे अच्छा अंगरखा था, जो कि उनके पास के अंगरखे से ज्यादा सुन्दर था, इस कारण वह ईर्ष्या से भर गए। और हम ईर्ष्या का बीज हम सभी में पाते हैं। यह न केवल उन भाइयों में था, अपितु हम सभी में है। परन्तु मसीही होने के नाते हमें इसका पता सबसे पहले लगाना चाहिए और यह जानना कि ईर्ष्या एक पाप है और इसके ऊपर रोक लगानी है। - रेव्ह. डॉ. सईपरियन के. गुच्चीन्डा**

कुलपतीयकालीन असामन्जस्यता को प्रस्तुत करने के पश्चात् जिसके परिणामस्वरूप यूसुफ के विरोध में उसके प्रति उत्तेजित हो गए। मूसा 37:12-36 के दूसरे भाग की ओर मुड़ता है। ये वचन एक छोटी कथा से मिलकर बने हुए हैं जो यह व्याख्या करती है कि उसके भाइयों ने कैसे यूसुफ को गुलामी के लिए बेच दिया।

भाइयों ने यूसुफ को बेच दिया

यहाँ हम देखते हैं कि भाइयों ने यूसुफ को पकड़ लिया, उसका रंगबिरंगा अंगरखा उतार कर उस नंगा कर दिया, और उसे मार देने की योजना बनाई। उसके सबसे बड़े भाई, रूबेन ने, व्यर्थ ही यूसुफ को बेचने में सहायता की। परन्त अन्त में, यह यहूदा था जिसने अन्य भाइयों को मना लिया कि उन्हें यूसुफ को मार देने की अपेक्षा गुलामी

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

में बेच देना चाहिए। यह वृतान्त भाइयों के साथ याकूब को दिए हुए दुखद:, धोखे वाले विवरण के साथ अन्त होता है कि यूसुफ को एक जंगली जानवार ने शिकार कर लिया है। भाइयों ने याकूब को यूसुफ के लहू से धब्बों से लगे हुए अंगरखे को प्रस्तुत किया, और याकूब गंभीर विलाप में चला गया।

ये दोनों वृतान्त मिलकर एक नाटकीय समस्या को परिचित कराते हैं जो यूसुफ और उसके भाइयों की पूरी कहानी के लिए दिशा को निर्धारित कर देती है। यह इस्राएल के अदिवासी कुलपतियों में दुखद: असामन्जस्यता का आरम्भ था।

यूसुफ के भविष्य के शासन के विषय के ऊपर कुलपतीयकालीन असामन्जस्यता की समस्या के आरम्भ को कर देने के पश्चात्, मूसा दूसरी अवस्था की ओर मुड़ता है। 38:1-41:57 में, मूसा यूसुफ के कठोरता से भरे हुए शासन के उदय को बताता है।

यूसुफ का कठोरता से भरा हुआ शासन (38:1-41:57)

इस अवस्था में, मूसा नाटकीय विडंबना का उपयोग उसके पाठकों को अंतर्दृष्टि देने के द्वारा करता है जो कहानी के पात्रों मे नहीं है। प्रथम, यूसुफ के भाइयों – जो कि यहाँ पर यहूदा के द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए हैं – कनान में रहते थे, आभासित होता है कि विश्वस्त थे कि उन्होंने यूसुफ को अपने ऊपर श्रेष्ठता पाने से रोक दिया है। परन्तु अन्य चरित्रों से अनिभज्ञ, यूसुफ का दूर मिस्र में शासन तेजी से विकास कर रहा था। परमेश्वर ने यूसुफ की गुलामी को उसके परिवार के ऊपर श्रेष्ठता के मार्ग की ओर मोड़ दिया था।

यूसुफ का कठोरता से भरा हुए शासन का केन्द्र दो मुख्य हिस्सों में विभाजित होता है। पहले स्थान पर, 38:1-30 यहूदा के कनान में तामार के विरूद्ध किए हुए पाप का विवरण है। इसके पश्चात्, 39:1-41:57 में, हम मिस्र में यूसुफ की सफलता के बारे में पाते हैं। आइए कनान में यहूदा के पाप को देखें।

यहूदा का कनान में पाप करना (उत्पत्ति 38:1-30)

इस अध्याय में यहूदा मंच के केन्द्र में आ जाता है, क्योंकि रूबेन की अपेक्षा, उसने पिछले वृतान्त में अपने भाई यूसुफ को मरने से बचाया था। इस कारण, यह खण्ड याकूब के उस पुत्र के कार्यों को प्रकट करता है जो जिसका अपने भाइयों में बहुत अधिक सम्मान था। कनान में यहूदा के पाप का वृतान्त 38:1-5 में यहूदा के पुत्रों के जन्म के विवरण के साथ आरम्भ होता है। नैतिक भाव वचन 2 में मिल जाते हैं जहाँ पर हम यह सीखते हैं कि यहूदा ने कनानी स्त्री से विवाह किया।

वचन 6-11 में हम यहूदा के पुत्रों और तामार के विवरण को पाते हैं। प्रथम, यहूदा ने तामार को अपने जेठे पुत्र एर को विवाह में दिया। जब एर मर गया, तो यहूदा ने तामार को अपने दूसरे नम्बर वाले पुत्र ओनान को विवाह में दिया। लेवीय के विवाह की यह व्यवस्था, या नि:सन्तान विधवा के देवर के साथ विवाह का ऐसा आदेश व्यवस्था विवरण 25:5-10 में लिखा हुआ मिलता है। इस व्यवस्था ने उस भाई के लिए एक सन्तान को सुनिश्चित किया जो मर गया था, और उसकी विधवा को सुरक्षा प्रदान की। परन्तु वचन 9 में, ओनान ने तामार को एक बच्चा प्रदान करने से इन्कार कर दिया। इस कारण, वचन 10 में, परमेश्वर ने ओनान के जीवन को भी ले लिया। यहूदा डर गया, कि कहीं उसका तीसरा पुत्र शेला भी उसके समान न मर जाए। इस कारण उसने अपनी बहू तामार को उसे विवाह में देने से इन्कार कर दिया। इसकी अपेक्षा, उसने तामार को उसके पिता के घर शर्म के साथ वापस भेज दिया।

वचन 12-26 में हम यहूदा को तामार के द्वारा प्रलोभित किए जाने के विवरण को पाते हैं। जब तामार ने यह जा लिया कि उसका विवाह शेला के नहीं होने वाला है, उसने स्वयं को वेश्या के रूप में बहुरूपिया बना लिया और यहूदा को प्रलोभित कर लिया। उसने चुतराई से यहूदा को उसकी मुहर और उसके बाजूबन्द और उसके हाथ की छड़ी को कीमत के भुगतान के बदले में रख लिया। तीन महीने के पश्चात्, वचन 24-26 में, यहूदा ने सुना कि तामार गर्भवती थी और उसने बड़े क्रोध के साथ उसको पत्थरवाह किए जाने का आदेश दिया। परन्तु तामार ने मुहर, बाजूबन्द और यहूदा के हाथ की छड़ी को प्रस्तुत किया जो उसे उसने दी थी। और जब यहूदा ने जान लिया कि उसने क्या किया, उसने दोष को स्वीकार कर लिया। सुनिए उत्पत्ति 38:26 को जहाँ पर यहूदा ऐसे कहता है कि:

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

वह तो मुझ से कम दोषी है; क्योंकि मैं ने उसे अपने पुत्र शेला से विवाह न किया (उत्पत्ति 38:26)।

जैसा कि यह वचन संकेत देते हैं, कुलपति यहूदा ने स्वीकार कर लिया कि उसका पास तामार के किए हुए पाप की अपेक्षा बहुत ही ज्यादा भारी था। और वह अपने नम्रता से भरे हुए अंगीकार और पश्चाताप में नमूना ठहरा। परिणामस्वरूप उसके ह्रदय के परिवर्तन के कारण, यहूदा के तामार के साथ किए हुए पाप की कहानी का अन्त सकारात्मक रूप में होता है। यहूदा के पुत्र के द्वारा कनानी स्त्री से विवाह कर लिए जाने के आरम्भिक वृतान्त के विपरीत, मूसा ने इस भाग को, वचन 27-30 में, यहूदा के तामार के द्वारा उत्पन्न हुए एक जन्म के विवरण के साथ किया है। दोनों अर्थात् पेरेस और जेरह यहूदा के गोत्र में सबसे मुख्य नाम बन गए।

कनान में यहूदा के पाप की घटनाओं को ध्यान में रखते हुए, आइए हम यूसुफ के कठोरता के साथ भरे हुए शासन के साथ सम्बद्ध दूसरे भाग की ओर मुड़ें। यह भाग, उत्पत्ति 39:1-41:57 में, मिस्र में यूसुफ की सफलता का विस्तार से दिया हुआ वर्णन है।

मिस्र में यूसुफ की सफलता (उत्पत्ति 39:1-41:57)

यह खण्ड तीन भागों में विभाजित है। पहला खण्ड 39:1-23 में उल्लेख करता है कि यूसुफ पोतीपर के घर से बन्दीगृह में पहुँच गया है। मिस्र में पहुँचने के पश्चात्, उसने बड़ी तेजी के साथ पोतीपर की कृपा को प्राप्त किया था और उसने उसके घर का नियंत्रण अपने हाथों में लिया था। परन्तु पोतीपर की पत्नी ने यूसुफ को बहकाने का प्रयास किया। जब वह इसमें असफल हो गई, तो उसने यूसुफ के ऊपर दुराचार का आरोप लगा दिया। यद्यपि यूसुफ ने उसके प्रयासों का विरोध किया था, पोतीपर ने उसके पत्नी के झूठे दोषों के ऊपर विश्वास किया। उसने यूसुफ को पोतीपर के बन्दीगृह में भेज दिया, जहाँ पर यूसुफ ने शीघ्रता से बन्दीगृह के दारोगा की कृपा को प्राप्त कर लिया। क्योंकि यह कहानी तामार के साथ यहूदा के पाप के ठीक तुरन्त बाद में आती है, यह स्पष्टता के साथ यहूदा की आरम्भिक अनैतिकता को यूसुफ की नैतिक पवित्रता के साथ विरोधाभास में प्रगट करती है।

जब हम यहूदा और तामार की कहानी को पढ़ते हैं, मैं लगभग ऐसा महसूस करता हूँ, कि इनमें से बातों को थोड़ा सा एक स्थान से उठा कर किसी दूसरे स्थान पर रखा जाना चाहिए। और फिर भी, जब आप वास्तव में संदर्भ को पढ़ते हैं, तो आप अक्षरश: पहचान जाएंगे कि क्यों परमेश्वर ने इस कहानी को रखा है जब उसने पहले यूसुफ की कहानी को रख दिया है। मैं सोचता हूँ कि वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह हमें एक धर्मी व्यक्ति और एक अधर्मी व्यक्ति में तुलना को दिखाना चाहता है। यूसुफ पोतीपर की पत्नी के यौन प्रलोभन का विरोध करने के लिए वास्तव में तैयार था। यहूदा वास्तव में वेश्यावृत्ति में सम्मिलित हुआ, कदाचित् यहाँ तक कि धार्मिक तीर्थ वेश्यावृत्ति में संलग्न होने के लिए। और इस तरह से आप तुलना को देखते हैं, और तथ्य यह है कि परमेश्वर यूसुफ को पहिलौठेपन की दोहरी आशीषों से आशीषित करने जा रहा था, यद्यपि वह पहिलौठा नहीं था, अपितु वह वह था जो कि उसके परिवार को धर्मी तरीके से नेतृत्व प्रदान करेगा। - डा. स्टीफन जे. ब्रामर

दूसरा, 40:141:45 में, यूसुफ बन्दीगृह से फिरौन के दरबार में पहुँच गया है। इस खण्ड में, मूसा ने यह विवरण दिया है कि कैसे यूसुफ फिरौन के अधिकारियों के स्वप्नों का अनुवाद करने के द्वारा प्रधानता के पद तक पहुँच गया। इसके पश्चात्, उसने फिरौन के स्वपनों को जो कि सात साल की बहुतायत और सात साल के अकाल के सम्बन्ध में है, अनुवाद किया।

तीसरे खण्ड, 41:46-57 में, मूसा ने फिरौन के दरबार में यूसुफ के शासन को सारांशित किया है। इस खण्ड में, मूसा ने उन कई तरीकों का उल्लेख किया है जिनमें यूसुफ ने मिस्र में अपने अधिकार का उपयोग, स्वयं फिरौन के पश्चात् किया। यूसुफ की सफलता के प्रत्येक खण्ड में, मूसा ने यह स्पष्ट कर दिया कि यूसुफ शक्तिशाली, अपनी प्रवीणता के कारण नहीं, अपितु परमेश्वर की दया के कारण होता चला गया।

अब क्योंकि हमने यूसुफ के भविष्य के शासन, और यूसुफ मिस्र में यूसुफ के कठोर शासन के प्रति कुलपतीयकालीन असामन्जस्यता की खोज कर ली है, इसलिए हमें कहानी के केन्द्रीय बिन्दु की ओर मुड़ना चाहिए: उत्पत्ति 42:1-47:12 में कुलपतियों का मेल-मिलाप एवं पुनर्मिलन का विवरण मिलता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

मेल-मिलाप एवं पुनर्मिलन (उत्पत्ति 42:1-47:12)

मेल-मिलाप एवं पुनर्मिलन की यह केन्द्रीय कथा आपस में घनिष्टता के साथ यूसुफ के परिवार की कनान से मिस्र की ओर की गई तीन यात्राओं के साथ सम्बन्धित है। पहली यात्रा उत्पत्ति 43:1-38 में है। दूसरी यात्रा 43:1-45:28 में पाई जाती है। और तीसरी यात्रा 6:1-47:12 में देखी जा सकती है। आइए पहली यात्रा को देखें।

पहली यात्रा (उत्पत्ति 43:1-38)

पहली यात्रा तीनों वृतान्तों में सबसे आसान है और तीन खण्डों में विभाजित की जा सकती है। प्रथम, 42:1-5 में, सभी भाई बड़े अकाल के कारण कनान से मिस्र की ओर यात्रा करते हैं। इस खण्ड में, याकूब यूसुफ के सभी भाइयों को, बिन्यामीन को छोड़कर, मिस्र में से भोजन खरीदने के लिए भेजता है।

दूसरा खण्ड, 43:6-28 मिस्र की उन घटनाओं का विवरण देता है जब यूसुफ ने सबसे पहले अपने भाइयों को पहचान लिया। यूसुफ ने अपनी पहचान को प्रकट नहीं किया, परन्तु उसने अपने भाइयों के चरित्र को उन्हें कनान में वापस भेज कर बिन्यामीन को ले आने के द्वारा जाँच की। सबसे पहले, यूसुफ ने सबसे पहले सभी को परन्तु उनमें से एक को जब तक वे बिन्यामीन को लेकर न आ जाए बन्दी बना लिया। परिणामस्वरूप, सभी भाइयों ने यह जान लिया कि उनके न्याय का समय आ गया है। 42:21 में, उन्होंने एक दूसरे से कहा: "नि:सन्देह हम भाई के विषय में दोषी हैं।" तीन दिनों के पश्चात्, यूसुफ ने शिमौन को छोड़कर बिन्यामीन को ले आने के लिए भेज दिया। उसने आदेश दिया कि उनके बोरों को अन्न *और* चाँदी से भर दो जिसे वह अन्न खरीदने के लिए अपने साथ लेकर आए थे। सभी भाइयों ने वापस यात्रा की, उनमें से एक ने पाया कि उसके बोरे में चाँदी है। सभी भाई डर गए और आश्चर्य से भर कर वचन 28 में कहने लगे कि, "परमेश्वर ने यह हम से क्या किया है?"

तीसरा खण्ड, वचन 29-38 में मिलता है, सभी भाइयों के कनान वापस लौटने पर क्या कुछ घटित हुआ का विवरण दिया हुआ है। उन्होंने अपने पिता को सहमत करने का प्रयास किया कि वह बिन्यामीन को मिस्र मे उनके साथ भेज दे, परन्तु याकूब ने अस्वीकार कर दिया। इस कारण सभी भाई कनान में ही रह गए।

दूसरी यात्रा (उत्पत्ति 43:1-45:28)

पहली यात्रा के ऊपर संक्षेप में देख लेने के पश्चात्, आइए हम अब उत्पत्ति 43:1-45:28 में दी हुई दूसरी यात्रा की घटनाओं की ओर मुड़ें। यद्यपि पहली यात्रा की अपेक्षा कुछ सीमा तक थोड़ी सी ज्यादा कठिन, दूसरी यात्रा भी तीन खण्डों में विभाजित होती है। प्रथम खण्ड, 43:1-14 में, सभी भाइयों का मिस्र में जाने का विवरण देता है। जब उनकी भोजन वस्तु समाप्त हो गई, तो याकूब अन्त में बिन्यामीन को सभी भाइयों को मिस्र में भेजने के लिए सहमत हो गया।

दूसरा खण्ड, 43:15-45:24, मिस्र में घटनाओं के लम्बे विवरणों के साथ मिलकर निर्मित हुआ है। प्रथम 43:15-34 में, यूसुफ ने उसके भाइयों को अपने घर में बड़ी जेवनार करके स्वागत किया। परन्तु वह निरन्तर अपनी पहचान को छिपाए रहा। 43:30 के अनुसार, यूसुफ बिन्यामीन को देखने के पश्चात् भावनाओं में *इतना* ज्यादा बह गया कि वह कमरे की निजता में रोने के लिए चला गया।

44:1-13 में, यूसुफ ने अपने भाइयों की और ज्यादा जाँच की। उसने अपने भण्डारियों को उनके बोरे अन्न और चाँदी और बिन्यामीन का बोरा चाँदी के कटोरे के साथ भरने का आदेश दिया। फिर यूसुफ ने अपने भाइयों को कनान में वापस भेज दिया। परन्तु यूसुफ के आदेश पर, भण्डारियों ने उसके भाइयों को पकड़ लिया। उसने चाँदी के कटोरे को बिन्यामीन के बोरे में से *पाया* और सभी भाइयों को यूसुफ के घर वापस लाया गया।

वचन 14-34 में, यहूदा ने यूसुफ से दया की याचना की और वचन 16 में स्वीकार किया: "परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म को पकड़ लिया है।" यहूदा ने फिर बिन्यामीन के स्थान पर निस्वार्थ स्वयं को मिस्र में रहने के लिए प्रस्ताव दिया। यूसुफ यहूदा की विनम्रता से भरी हुई याचना पर पिघल गया। और 45:1-15 में, यूसुफ ने अन्त में अपनी पहचान को अपने भाइयों के ऊपर प्रगट कर दिया। अध्याय 45:2 हमें बताता है कि "तब [यूसुफ] चिल्ला

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

चिल्लाकर रोने लगा; और मिस्रियों ने सुना, और फिरौन के घर के लोगों को भी इसका समाचार मिला।" यूसुफ ने वचन 7 में यह विवरण दिया है कि परमेश्वर ने उसे मिस्र में "इसी लिए भेजा कि तुम पृथ्वी पर जीवित रहो, और तुम्हारे प्राणों के बचने से तुम्हारा वंश बढ़े।" उसने तब अपने सभी भाइयों को आदेश दिया कि वह उनके पिता को, मिस्र में ले आए। यह दृश्य वचन 14-15 के साथ यूसुफ और बिन्यामीन के एक साथ रोने के द्वारा समाप्त होता है जब वे एक दूसरे को गले लगा रहे थे और यूसुफ उसे चुम्बन दे रहा था और अपने सभी भाइयों के साथ बात कर रहा था।

यूसुफ की कहानी का मध्य का भाग यूसुफ और उसके भाइयों के बीच मेल-मिलाप के बारे में है। वह पहले से ही मिस्र में चला गया था, परेशानियाँ उठ खड़ी हुई थी, यूसुफ के भाई अन्न और अकाल से राहत ढूँढ रहे थे और परन्तु इन सब के बीच में, अध्याय 45 में विशेष रूप से, हमारे पास एक वैभवशाली चित्र दिखाई देता है – यह वास्वत में वैभवशाली है – यह उत्पत्ति की सम्पूर्ण पुस्तक के सबसे अधिक नाटकीय और भावनात्मक खण्डों में से एक है, और यह तब है जब यूसुफ और उसके भाई का अन्त में मेल-मिलाप हो जाता है। और यहाँ जो आप पाते है वह यह है कि वह एक दूसरे के गले लग रहे हैं और वे रोए और रोए और रोए चले जा रहे हैं। वह इस अध्याय में इतना ज्यादा रोते हैं और बस थोड़ा सा पहले, यहाँ तक मिस्री आश्चर्य में पड़ जाते हैं कि वे क्यों रोए चले जा रहे हैं। और इस तरह से यह एक प्यारा सा चित्र है क्योंकि उन भाइयों मे बहुत ज्यादा असामन्जस्यता थी, परन्तु उन्हीं पलों में वे पूरी तरह से एकता में आ गए थे। और यह एकता इस सच्चाई से आई, प्रथम, यह कि यूसुफ ने उसके भाई को परख लिया था और पाया थे कि वे परिवर्तित हो गए थे। वे पहले के जैसे नहीं जब उन्होंने उसे मार डालना चाहा था, जब उन्होंने उसके पिता को धोखा दिया था और ऐसी अन्य बातें उनमें थी। वे परिवर्तित लोग थे, और उनमें से निश्चित ही एक, जैसे यहूदा, विशेष रूप से एक *परिवर्तित* व्यक्ति के रूप में सामने आता है...मेल-मिलाप सबसे पहले इस सच्चाई से आता है कि ये सभी भाई परिवर्तित हो गए थे और यह कि यूसुफ भी परिवर्तित हो गया था। वह एक भड़कीले जवान से अपने स्वप्नों के बारे में एक बहुत ही गौरवशाली और ऐसी बातों में जो किसी एक व्यक्ति को उसके शक्तिशाली पद से उसमें दया को लाती है, परिवर्तित हो गया था। और जैसा कि आप देखते हैं कि ये बातें इन अध्यायों में घटित हो रही हैं, या इन अध्यायों में पहचान जाते हैं, ये दृश्य एक दूसरे के साथ रोने और गले लगाने का बहुत ही शक्तिशाली और मूसा के दिनों में इस्राएलियों के हृदयों में स्पष्ट रूप से चिपक गया होगा। - डॉ. रिचर्ड एल. प्रॉट, जूनीयर

इसके पश्चात्, 45:16-24 में, फिरौन ने यूसुफ को आदेश दिया कि वह उसके भाइयों को वापस भेज कर याकूब को बुलवा ले। और फिरौन ने वचन 20 में यूसुफ से प्रतिज्ञा की: "मिस्र देश में जो कुछ अच्छे से अच्छा है वह तुम्हारा है।" यूसुफ ने स्वीकार किया इसके भाइयों को आदेश दिया कि वह उनके नए प्राप्त हुए सामन्जस्यता में बने रहें। वचन 24 में यूसुफ ने आदेश दिया, कि वह "मार्ग में कहीं झगड़ा न करें!"

दूसरी यात्रा के अन्तिम खण्ड, 45:25-28 में, सभी भाई कनान में वापस लौट गए। उन्होंने जो कुछ मिस्र में घटित हुआ था उसे याकूब को सुनाया, और याकूब उनके साथ मिस्र में आने के लिए सहमत हो गया।

पहली यात्रा और दूसरी यात्रा में कुलपतियों के मध्य में मेल-मिलाप और पुनर्मिलन को देख लेने के पश्चात्, हम अब उत्पत्ति 46:1-47:12 में दी हुई तीसरी यात्रा तक पहुँच जाते हैं।

तीसरी यात्रा (उत्पत्ति 46:1-47:12)

तीसरी यात्रा दो मुख्य खण्डों में विभाजित होती है। प्रथम 46:1-27 में सभी भाइयों का मिस्र की ओर यात्रा किए जाने का उल्लेख मिलता है, परन्तु इस बार याकूब के साथ। वचन 1-7 में, हम यात्रा के विवरण और परमेश्वर के आश्वासन के बारे में पाते हैं कि याकूब मिस्र में आशीष को पाएगा। यात्रा का क्रम तब, 46:8-27 में, याकूब के पुत्रों और पोतों के साथ जो उसके साथ मिस्र में गए समाप्त हो जाता है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

दूसरा, ठीक वैसे ही जैसे पहली और दूसरी यात्रा में हुआ, 46:28-47:12 मिस्र में घटित हुई घटनाओं के ऊपर एक खण्ड को प्रस्तुत करता है। अध्याय 46:28-30 याकूब का यूसुफ के साथ हुए पुनर्मिलन का विवरण देता है जिसमें यहूदा अग्रणी भूमिका को निभाता है। और इसके पश्चात्, 46:31-47:12 में, फिरौन यूसुफ के परिवार का स्वागत करता है और उन्हें गोशेन में यूसुफ के अधीन रहने के लिए आदेश देता है।

कुलपतियों के मेल-मिलाप और पुनर्मिलन के विवरण को लिख लेने के पश्चात्, मूसा तब चौथी अवस्था, या उसकी कहानी में नम्रता से भरे हुए कार्यों की मुड़ता है। उत्पत्ति 47:13-27 में, मूसा ने यूसुफ के परोपकारिता से भरे हुए शासन के बारे में वर्णन किया है।

यूसुफ का परोपकारिता से भरा हुआ शासन (उत्पत्ति 47:13-27)

47:13-27 में, हम सीखते हैं कि अकाल और ज्यादा बढ़ गया, यूसुफ ने पूरे मिस्र और कनान में अन्न को उपलब्ध किया। और उसने फिरौन की सामर्थ्य को मिस्र और कनान में रहने वाले लोगों की जमीन और पशुधन को खरीद कर उन्हें अन्न की उपलब्धता के द्वारा और ज्यादा शक्तिशाली कर लिया। इस प्रक्रिया में, उसने अँसख्य जीवनों को बचा लिया।

इस विवरण के अन्त में, उत्पति 47:27 में, मूसा ने यह आदेश दिया कि कैसे यूसुफ के आदेश ने याकूब और उसके पुत्रों को लाभ पहुँचाया। मूसा ने ऐसे लिखा है कि:

> **इस्राएल मिस्र के गोशेन प्रदेश में रहने लगे; और वहाँ की भूमि उनके वश में थी; और वे फूले-फले, और अत्यन्त बढ़ गए (उत्पत्ति 47:27)।**

कुलपतियों की आरम्भिक असामन्जस्यता, यूसुफ के कठोरता से भरे हुए शासन, इसके भाइयों के साथ मेल-मिलाप और पुनर्मिलन, और यूसुफ के मिस्र में परोपकारिता से भरे हुए शासन के पश्चात्, हम मूसा के यूसुफ और उसके भाइयों को बारे में दिए अन्तिम विवरण तक आ पहुँचते हैं। उत्पत्ति 47:28-50:26 में, यूसुफ के परिवार ने यूसुफ के शासन के अधीन कुलपतीय सामन्जस्यता अर्थात् सद्भाव का अनुभव किया।

कुलपतियों में सामंजस्यता (उत्पत्ति 47:28-50:26)

यह अन्तिम अवस्था कुलपतियों के मध्य में असामन्जस्यता की आरम्भिक समस्या का समाधान करती है। और यूसुफ के परिवार के सद्भाव के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए, यह इस्राएल के लिए आशीषों को स्थापित करती है जो कि मूसा के प्रथम पाठकों के लिए विशेष रूप से अति महत्वपूर्ण थी।

कुलपतीय सद्भाव के ऊपर अध्याय दो मुख्य खण्डों में विभाजित होता है। प्रथम स्थान पर, उत्पत्ति 47:28-50:14 में, मूसा ने याकूब के अन्तिम दिनों में पारिवारिक प्रबन्धों को स्थापित करते हुए ध्यान को केन्द्रित किया है। इसके पश्चात् उत्पत्ति 50:15-26 में, हम यूसुफ को पारिवारिक प्रबन्धों को स्थापित करते हुए देखते हैं। आइए सबसे पहले याकूब के द्वारा स्थापित पारिवारिक प्रबन्धों को देखें।

याकूब के द्वारा पारिवारिक प्रबन्ध (उत्पत्ति 47:28-50:14)

इस खण्ड का आरम्भ याकूब के उसकी मृत्यु के निकटता में होने से आरम्भ होता है। 47:28-31 में, मूसा ने विवरण दिया है याकूब यूसुफ से स्वयं को कनान में मिट्टी दिए के लिए शपथ लेता है। इसके पश्चात् 48:1-49:28 में, हम याकूब को दो भिन्न मुलाकातों में आशीषों के दिए जाने में सम्मिलित होते हुए पढ़ते हैं।

48:1-22 में, पहली मुलाकात में, याकूब गुप्त में यूसुफ और इसके पुत्रों एप्रैम और मनश्शे को आशीष देता है। यहाँ, यूसुफ ने दोगुणी मीरास के सम्मान को, जो कि सामान्यत: पहिलौठों को दी जाती है, प्राप्त किया। परन्तु, अप्रत्याशित रूप में, याकूब ने, यूसुफ के दूसरे पुत्र एप्रैम को उसके जेठे पुत्र मनश्शे के ऊपर प्रमुखता दी।

इसके पश्चात् 49:1-28 में, यूसुफ और उसके पुत्रों को गुप्त में ऊँचा कर दिए जाने के पश्चात्, याकूब के सभी पुत्रों ने इससे अन्तिम आशीषों को प्राप्त किया। याकूब ने उसके सभी पुत्रों को इक्ट्ठा किया, और एक एक करके

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

कुलपति ने उन्हें इस तरीके से आशीष दी जो कि उनके द्वारा यापन किए हुए जीवन के अनुसार उपयुक्त थे। याकूब की अन्तिम आशिषों के अनुसार, इन प्रबन्धों की मंशा आने वाली पीढ़ियों के लिए किया गया था।

यह खण्ड उत्पत्ति 39:29-50:14 के साथ समाप्त होता है, जहाँ हम याकूब की मृत्यु और उसे मिट्टी दिए जाने के विषय को पाते हैं। इन वचनों में, यूसुफ उसके पिता को कनान में मिट्टी दिए जाने की अन्तिम इच्छा को पूरा करता है। इसके पश्चात् वह मिस्र में लौट आता है।

यूसुफ के शासन में कुलपतीय सद्भाव न केवल याकूब के द्वारा किए हुए अन्तिम प्रबन्धों के एक खण्ड को सम्मिलित करते हैं; अपितु यह उत्पत्ति 50:15-26 में यूसुफ के द्वारा किए हुए पारिवारिक प्रबन्धों को भी समाविष्ठ करते हैं।

यूसुफ के द्वारा पारिवारिक प्रबन्ध (उत्पत्ति 50:15-26)

यह संक्षिप्त खण्ड दो लघु विवरणों के साथ विभाजित होता है। 50:15-21 में, यूसुफ ने उसके भाइयों के प्रति उसकी दयालुता का आश्वासन दिया। यूसुफ के भाइयों ने उससे क्षमा की अपील की और यूसुफ ने उन्हें कृपा से भरते हुए क्षमा कर दिया।

> **कई बातों में से एक जिसे हम यहाँ पर देखते हैं वह यह है कि यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में क्षमा की सामर्थ्य है, हमारे लिए परमेश्वर के भले प्रयोजनों के ऊपर भरोसा करने की सामर्थ्य के ऊपर है यहाँ तक कि जब परिस्थितियाँ हमारे लिए अत्यन्त कठिन ही क्यों न हो, और हम उन्हें देख सकते हैं जो उनकी जैसी ही कठिन परिस्थितियों में नहीं हैं। हम हो सकता है कि उचित ही यह कहने के योग्य हों कि, "उन्होंने मुझे इस परिस्थिति में डाल दिया है।" परन्तु यूसुफ की उसके भाइयों के प्रति प्रतिक्रिया, विशेष रूप से उसे गुलामी में बेच देने में, हम पाते हैं कि, प्रभु के प्रति भरोसा और आज्ञाकारिता और विशेष और उसके आवश्यक प्रयोजनों की पूर्णता है जिसके लिए परमेश्वर ने उसके गंतव्य को नियुक्ति किया था।**
>
> **- रेव्ह. डॉ. माईकल वाल्कर**

उत्पत्ति 50:19-21 में यूसुफ ने उसके भाइयों को कहा:

> **मत डरो, क्या मैं परमेश्वर की जगह पर हूँ? यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिए बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने इसी बात में भलाई का विचार किया, जिससे वह ऐसा करे, जैसा आज के दिन प्रगट है, कि बहुत से लोगों के प्राण बचे है। इसलिए अब मत डरो; मैं तुम्हारा और तुम्हारे बाल- बच्चों का पालन पोषण करता रहूँगा (उत्पत्ति 50:19-21)।**

यूसुफ और उसके भाइयों की पूरी कहानी का अन्त उत्पत्ति 40:22-26 में यूसुफ के द्वारा उसके भाइयों से एक शपथ लिए जाने के द्वारा होता है। सुनिए उत्पत्ति 50:25 को:

> **फिर यूसुफ ने इस्राएलियों से यह कहकर, कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, उनको इस विषय की शपथ खिलाई, कि "हम तेरी हड्डियों को यहाँ से उस देश में ले जाएंगे (उत्पत्ति 50:25)।**

उत्पत्ति के विवरण में, यह शपथ यूसुफ के भाइयों के साथ उसकी मृत्यु से पहले किया हुआ अन्तिम वार्तालाप है। यूसुफ के भाइयों ने उनके वंशजों के बदले में उससे शपथ खाई जब परमेश्वर इस्राएल को मिस्र में से छुटकारा देगा, तो वे निरन्तर यूसुफ की हड्डियों को प्रतिज्ञात् भूमि में मिट्टी देने के लिए ले जाकर करने के द्वारा सम्मान देंगे।

> **यूसुफ के अन्तिम शब्द ऐसे थे: "परमेश्वर निश्चय ही तुम्हारी देखभाल करेगा" - अपने भाइयों और उनके परिवार के साथ मूल रूप से बात करते हुए उसने कहा – "और तुम मेरी हड्डियों को वहाँ पर मिट्टी देने के लिए ले जाना। एक मिस्री शासक के रूप में, यह संभावना बहुत अधिक थी कि जब यूसुफ मर जाता तो उसके शव को सुगन्ध के साथ संलेपन करते हुए ताबूत में रखा जाता...प्रत्येक बार जब भी वे ताबूत को देखते, तो वह उस प्रतिज्ञा के बारे में सोचते, जो उन्होंने यूसुफ को दी थी और इस प्रतिज्ञा को जिसे उन्हें**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

कुलपति को दी थी कि वह प्रतिज्ञात् भूमि में लौट आएँगे। यूसुफ ने कहा था कि, "मेरी हड्डियों को अपने साथ ले जाना; उन्हें प्रतिज्ञात् भूमि में मिट्टी देना।" यह हिस्सा उसकी ओर से परमेश्वर की प्रतिज्ञा को स्वीकार करने का है...और इस तरह से, जब यहूदियों ने मिस्र को छोड़ दिया, मूसा अपने साथ यूसुफ की हड्डियों को ले गया। एक बार फिर से, चालीस वर्षों में यह एक बहुत बड़ी प्रतिज्ञा का चिन्ह, एक दिखाई देने वाली वस्तु बन गया जिसे परमेश्वर के द्वारा उसके लोगों इस्रालियों को प्रतिज्ञात् भूमि में होने के लिए दिया गया था। इस तरह से, हड्डियों को अन्त में शकेम में मिट्टी दी गई थी और जो सिद्धान्त यहाँ मिलता है, वह मैं सोचता हूँ कि बहुत ही सरल है: परमेश्वर की प्रतिज्ञा को किसी के भी जीवन में किसी भी वस्तु से अधिक वास्तविक होना चाहिए। परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करता है। - डॉ. लैरी जे. वॉटरर्स

यूसुफ और इसके भाइयों के ऊपर हमारे इस अध्याय में यहाँ तक, हमने मूसा के विवरण की संरचना और विषय-वस्तु को देखा है। अब, हमें हमारे अध्याय के दूसरे मुख्य विषय, जो कि इस अध्याय का मुख्य विषयों में से एक है, की ओर मुड़ना चाहिए।

मुख्य विषय

उत्पत्ति के मूल पाठकों के लिए यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी के, हमारे यहाँ पर उल्लेख करने से ज्यादा कई निहितार्थ थे। और यही हमारे आधुनिक उपयोग के साथ है। परन्तु फिर भी, यदि हम इन अध्यायों को मूल पाठकों के संदर्भ में देखें, तो कई निश्चित विषय हमारे सामने आ जाते हैं। ये मुख्य विषय उन सभी तरीकों के विषय को नहीं बताते हैं जिसमें यूसुफ की कहानी मूल पाठकों के लिए रूपरेखांकित की गई है। न ही यह उन सभी तरीकों को प्रस्तुत करती है जिनमें हमें आज के समय इसे लागू करना चाहिए। परन्तु ये मुख्य विषय हमें उत्पत्ति के इस हिस्से के प्रति सबसे महत्वपूर्ण गुणों की ओर दिशा निर्देश देते हैं।

इन अध्यायों के कुछ मुख्य विषयों को हम दो तरीकों से देखेंगे। प्रथम, हम कुछ टिप्पणियाँ देंगे कि कैसे हम कुछ साझी महत्वपूर्ण बातों तक पहुँच सकते हैं जो कि यूसुफ और अब्राहम, इसहाक और याकूब की कहानी के विवरणों में पाई जाती हैं। और दूसरा, हम बहुत ही सावधानी से दो विशेष महत्वपूर्ण बातों के ऊपर ध्यान देंगे जो कि यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में विशेष दिखाई देती हैं। आइए सर्वप्रथम साझी महत्वपूर्ण बातों को देखें।

साझे महत्व की बातें

जैसा कि हमने उत्पत्ति के अन्य अध्यायों में देखा कि, अब्राहम, इसहाक और याकूब के जीवनों से सम्बन्धित कथाओं में चार मुख्य विषय प्रगट होते हैं। यह विषय: इस्राएल के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह, इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा, इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीष, इस्राएल के द्वारा परमेश्वर की आशीष यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में भी प्रगट होते हैं। आइए कुछ पलों के लिए देखें कि कैसे बाइबल के इस हिस्से में इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह का विषय प्रतिबिम्बित होता है।

इस्राएल के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह

पवित्रशास्त्र ईश्वरीय अनुग्रह, दया और कृपा के लिए विशेष शब्दावली का उपयोग करता है, परन्तु हम बहुत कम इन शब्दों का उपयोग यूसुफ की कहानी में देखते हैं। परन्तु फिर भी, हम परमेश्वर के अनुग्रह के *विषय* को इन सभी अध्यायों में देखते हैं। यूसुफ के दिनों को जिसे हम अतीत का "वह संसार" कह कर पुकारते हैं, से परमेश्वर ने कभी-कभी यूसुफ और उसके परिवार को अतीत के अनुग्रह का स्मरण दिलाया, वह अनुग्रह जिसे उसने उसके समय के आने से पहले दिखाया था। परमेश्वर ने साथ ही प्रत्येक मोड़ पर यूसुफ और उसके परिवार को चलते रहने वाले अनुग्रह को दिखाया। और जब परमेश्वर ने भविष्य की घटनाओं की ओर संकेत दिया, तो उसने अकसर यह संकेत दिया कि कैसे यूसुफ और उसका परिवार एक दिन भविष्य के अनुग्रह, विशेषकर प्रतिज्ञात् भूमि में लौटने के अनुग्रह को प्राप्त करेगा।

परन्तु इस तीन तरह के अनुग्रह ने यूसुफ की कहानी को आकार नहीं दिया। मूसा ने परमेश्वर के अनुग्रह को यूसुफ के दिनों में लिखा ताकि उसके मूल पाठक कई तरीकों का बोध कर सकें जो जिसमें परमेश्वर अतीत के "उनके संसार" में उन पर अनुग्रह दिखाया था।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

बहुत कुछ इसी तरह से, मसीह के अनुयायियों, हमें परमेश्वर का यूसुफ और उसके परिवार के ऊपर दिखाया हुआ अनुग्रह हमारे संसार के ऊपर लागू होता है। इसे लागू करने के लिए बहुत से तरीके हैं, परन्तु यह अकसर मसीह के राज्य के तीन अवस्थाओं के संदर्भ में सोचना सहायतापूर्ण होता है। नए नियम के हमारे दृष्टिकोण से, परमेश्वर का अतीत में यूसुफ और उसके भाइयों के ऊपर दिखाया हुआ अनुग्रह हमारे ऊपर भी लागू होता है जैसे कि यह मसीह के प्रथम आगमन, उसके राज्य के उदघाटन के समय पर प्रदर्शित हुआ था। जिस भी समय हम यूसुफ की कहानी में परमेश्वर के निरन्तर चलते रहने वाले अनुग्रह को देखते हैं, हमें उसके निरन्तर चलते रहने वाले अनुग्रह को हमारे अपने पूरे जीवनों में मसीह के राज्य की निरन्तरता में स्मरण करते हैं। और बिल्कुल यूसुफ और उसके परिवार की तरह जिसने परमेश्वर के भविष्य के अनुग्रह की अपेक्षा की, हम भी परमेश्वर की दया की आशा को नई पृथ्वी और नए स्वर्ग में मसीह के राज्य की पराकाष्ठा में आशा कर सकते हैं।

इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह की साझी बातों के महत्व के साथ, आइए हम इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा की शर्त को देखें।

इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा

यूसुफ और उसके भाइयों के अतीत के उस संसार की मूसा की कथा की असामान्य विशेषताओं में से एक यह है कि मूसा ने कभी भी परमेश्वर की ओर मौखिक निर्देशों या आदेशों को उद्धृत नहीं किया है। इसकी अपेक्षा, मूसा ने यह अपेक्षा की कि इस्राएली स्वयं परमेश्वर के प्रति मूसा की निष्ठा का मूल्यांकन उस संसार में उस व्यवस्था के आलोक में करें जिसे वे उनके इस संसार में प्राप्त करेंगे।

अब, इसमें कोई सन्देह नहीं है, कि मूसा जानता था कि कुलपति अपने उद्धार को परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति निष्ठावान होने के द्वारा कमा नहीं सकते थे। यह सदैव ही असंभव रहा है। परन्तु उनकी आज्ञाकारिता और अनाज्ञाकारिता ने इस कहानी की प्रत्येक अवस्था में उनके हृदयों की सच्ची परिस्थितियों को प्रदर्शित कर दिया था। और मूसा ने उसके पाठकों को यूसुफ की कहानी के प्रकाश में उनके अपने हृदयों को जाँच करने की उन्हें बुलाहट दी।

उदाहरण के लिए, नकारात्मक पहलू की ओर, मूसा को सीधे शब्दों में भाइयों के द्वारा यूसुफ को मारने की योजना का परमेश्वर के द्वारा अस्वीकार किए जाने के बारे में नहीं बोलना पड़ा। उसके पाठक पहले से ही जानते थे कि इससे निर्गमन 20:12 में दिए हुए कत्ल के विरूद्ध छठी आज्ञा को तोड़ दिया है। यूसुफ को गुलामी में बेचना व्यवस्था विवरण 24:7 जैसी व्यवस्था का उल्लघंन था। भाइयों निर्गमन 20:12 में दी हुई माता और पिता के सम्मान के आदेश को तोड़ दिया जब उन्होंने याकूब को धोखा दिया। जब यहूदा तामार के साथ, यह सोचते हुए सोया कि वह एक वेश्या थी, तो उसने निर्गमन 20:14 और लेवियों 19:29 की अन्य व्यवस्था में दी हुई यौन अनैतिकता के विरूद्ध दिए हुए आदेश को तोड़ दिया।

परन्तु सकारात्मक पहलू की ओर, मूसा साथ ही उसके पाठकों के व्यवस्था के प्रति ज्ञान की पहचान के ऊपर निर्भर रहा जब यूसुफ और उसके सभी भाई परमेश्वर के प्रति निष्ठावान रहे थे। उदाहरण के लिए, यूसुफ ने निर्गमन 20:14 और 17 में दिए हुए छठे और दसवीं आज्ञा की पुष्टि की थी, जब उसने यौन नैतिकता को पोतीपर की पत्नी के द्वारा आए यौन प्रलोभन का विरोध में प्रकट किया था। बाद में, उत्पत्ति 46:29-34 जैसे संदर्भो में, यूसुफ और उसके भाइयों ने अपने पिता का सम्मान निर्गमन 20:12 में दिए हुए पाँचवीं आज्ञा के अनुरूप किया। भाइयों के द्वारा यूसुफ के सामने किए हुए पश्चाताप और विनम्रता ने लैव्यव्यवस्था 5:5 जैसे प्रसंगों की व्यवस्था को प्रदर्शित किया। यूसुफ की उसके भाइयों के प्रति दिखाई दयालुता और दया लैव्यव्यवस्था 19:18 जैसे संदर्भो के प्रति सच्चा हैं। इस तरह से, हम देख सकते हैं, कि जैसे मूसा ने अतीत के उस संसार में निष्ठाहीनता और निष्ठावान होने का विवरण दिया है, इससे उसने उसके मूल पाठकों के उनके संसार में उनकी निष्ठाहीनता और निष्ठावान होने की बुलाहट के प्रति ध्यानाकर्षित किया।

आधुनिक मसीही होने के नाते, यहाँ पर कम से कम तीन ऐसे मुख्य तरीकें हैं जिनमें हमें यूसुफ की कहानी में परमेश्वर के प्रति निष्ठाहीनता और निष्ठावान होने को देखना चाहिए। प्रथम, हमें इन आदर्शों को परमेश्वर के प्रति यीशु की सिद्ध आज्ञाकारिता के साथ, विशेष रूप से उसके राज्य के उदघाटन में तुलना करनी और भिन्नता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

देखनी चाहिए। दूसरा, हमें यूसुफ की कहानी के नैतिक सिद्धान्तों को मसीह के राज्य की निरन्तरता में हमारे जीवनों के साथ लागू करने के लिए तैयार रहना चाहिए। और अन्त में, यूसुफ की कहानी में निष्ठावान होने की शर्त को हमारे ध्यान उन घटनाओं की ओर खींचना चाहिए जो मसीह के राज्य की पराकाष्ठा उसके पुन: आगमन के समय घटित होगी। उस समय, वे सभी जिन्होंने बचाने वाले विश्वास को उपयोग में लाया है पूरी तरह से धर्मी ठहराए जाएँगें और नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में परमेश्वर के सिद्ध आज्ञाकारी सेवकों के रूप में परिवर्तित हो जाएंगे।

हमने इस्राएल के प्रति परमेश्वर के अनुग्रह और इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा की साझी की गई महत्व की बातों को देख लिया है। तीसरी महत्वपूर्ण बात दोनों अर्थात् यूसुफ और आरम्भिक कुलपतीय इतिहास के द्वारा इस्राएल के ऊपर परमेश्वर की आशीष के विषय में साझा किया गया है

इस्राएल के ऊपर परमेश्वर की आशीष

यूसुफ और उसके भाइयों के लिए अतीत के "उस संसार" के शब्दावली में, हमें यह उल्लेख करना चाहिए कि परमेश्वर ने उसकी आशीषों को कई बार कुलपतियों की निष्ठाहीनता के बावजूद और अन्य समयों में उनके द्वारा निष्ठावान होने की प्रतिक्रिया के समय उनके ऊपर उंडेला था। मूसा ने उसके लोगों के लिए परमेश्वर की आशीषों को अतीत के उस संसार को उसके मूल पाठकों को उन असँख्य तरीकों में किया सचेत किया जिसमें उन्हें परमेश्वर ने उनके संसार में आशिषित – दोनों उनकी निष्ठाहीनता और साथ ही उनके निष्ठावान होने की प्रतिक्रिया के बावजूद किया था।

बहुत कुछ इसी तरीके से, यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी में परमेश्वर की आशीषें आज भी हमारे संसार में लागू होती है। कई बार यह हमारे निष्ठाहीन होने के बावजूद और अन्य समयों में हमारे निष्ठावान होने की प्रतिक्रिया के समयों में होती हैं। हम यूसुफ की कहानी और हमारे जीवनों में मसीह के राज्य के उदघाटन में उसके लोगों के लिए उंडेली गई परमेश्वर की आशीषों को स्वीकार करने में आपसी सम्बन्ध को पाते हैं। और हम आगे की ओर देखते हैं कि कैसे परमेश्वर हमें मसीह के राज्य की पराकाष्ठा में आशीषित करेगा।

इस्राएल के प्रति परमेश्वर का अनुग्रह, इस्राएल की परमेश्वर के प्रति निष्ठा, और इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीषों के साझे महत्व के साथ, यूसुफ की कहानी इस्राएल के द्वारा परमेश्वर की आशीषों के ऊपर भी एक महत्व की बात को साझा करती है।

इस्राएल के प्रति परमेश्वर की आशीष

उत्पत्ति 12:3, 22:18 और 26:4 जैसे संदर्भ हमें बताते हैं कि परमेश्वर ने इस्राएल को आशीषित किया और अब्राहम और उसके वंशजों को उसके राज्य और इसकी आशीषों को सभी जातियों तक विस्तारित करने लिए नियुक्त किया। यह विषय यूसुफ के अतीत के उस संसार में उन तरीकों में प्रगट होते हैं जिनमें यूसुफ ने मिस्र में अन्यों के लिए आशीषों का नेतृत्व देने के लिए शासन किया। उदाहरण के लिए, यूसुफ उत्पत्ति 39:5 में पोतीपर के लिए एक आशीष का कारण था। वह 39:22 में फिरौन के बन्दीगृह के दरोगा के लिए एक आशीष थी। और यूसुफ ने फिरौन को आशीषित किया जब उसने 41:25 में फिरौन के स्वप्न का अनुवाद किया। परन्तु महान् आशीषें अन्य के लिए तब आई जब यूसुफ शक्ति के ऊँचे शिखर पर पहुँचा जब उसने मिस्रियों और अन्य जातियों को आशीषित किया। जैसा कि उत्पत्ति 41:56-57 में विवरण दिया गया है कि:

> **इसलिए जब अकाल सारी पृथ्वी पर फैल गया, तब यूसुफ सब भण्डारों को खोल खोलके मिस्रियों के हाथ अन्न बेचने लगा... इसलिए सारी पृथ्वी के लोग मिस्र में अन्न मोल लेने के लिये यूसुफ के पास आने लगे, क्योंकि सारी पृथ्वी पर भयंकर अकाल था (उत्पत्ति 41:56-57)।**

यह देखना बहुत आसान है कि कैसे इस्राएल की आशीषें अन्य के ऊपर मूसा के मूल पाठकों के समय "उनके संसार" के ऊपर लागू की गई हैं। प्रथम, यूसुफ की कहानी सुनने के समय, इस्राएली यह जानने के द्वारा उत्साहित हुए थे कि उनके कुलपतियों ने अन्यों को पहले से ही आशीषित किया था। उन्होंने साथ ही यह जान लिया होगा कि परमेश्वर ने उन्हें उनके अपने दिनों में परमेश्वर की आशीषों को अन्य लोगों तक पहुँचाने के लिए बुलाहट दी है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

और वे आने वाले भविष्य की ओर देख रहे होंगे जब उनके वंशज परमेश्वर की आशीषों को पूरे संसार में विस्तारित कर देंगे।

जैसा कि आप अपेक्षा करते होंगे, यह विषय भी हमारे संसार के ऊपर लागू होता है। मसीह ने उसके राज्य के उदघाटन में इस संसार को आशीषों को प्रदान किया है। वह इस संसार को कलीसिया के द्वारा उसके राज्य की निरन्तरता के मध्य में आशीषित करता है। और एक दिन, वह इस संसार की प्रत्येक जाति और गोत्र को नई सृष्टि में उसके राज्य की पराकाष्ठा के समय पर आशीषित करेगा।

विशेष महत्व की बातें

जैसा कि हमने यूसुफ की कहानी में मुख्य विषयों की खोज कर ली है, हमने यूसुफ की कहानी और उत्पत्ति में बाकी के कुलपतीय इतिहास के बीच साझे महत्व की बातों में से कुछ का उल्लेख किया है। अब हमें हमारे ध्यान को यूसुफ की कहानी में पाए जाने वाले दो विशेष महत्व की ओर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। इस अध्याय में हमने जैसा कि पहले प्रस्तावित किया है:

यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी ने इस्राएल के गोत्रों को यह शिक्षा दी कि कैसे वह सद्भाव के साथ इक्ट्ठे रहे सकते हैं जब उन्होंने प्रतिज्ञात् भूमि के ऊपर विजय और इसमें बसने की बात का सामना किया।

जैसा कि हमने देखा, उत्पत्ति के बहुत से इस भाग के लेन देन यूसुफ और उसके भाइयों के मध्य में असमान्जस्यता और सद्भाव के साथ है। और यूसुफ और उसके भाइयों इस्राएल के बारह गोत्रों के प्रधान थे। इस लिए, ये सम्पर्क सीधे मूसा के दिनों में इस्राएलियों के गोत्रों के मध्य में हुए सम्पर्कों के साथ सम्बन्धित हैं। यूसुफ के उत्पत्ति 50:24-25 में दिए हुए अन्तिम शब्दों को सुनिए जहाँ पर ये सम्पर्क आगे की ओर बढ़ते हैं:

यूसुफ ने अपने भाइयों से कहा, "मैं तो मरने पर हूँ; परन्तु परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, और तुम्हें इस देश से निकालकर उस देश में पहुँचा देगा, जिसके देने की उस ने अब्राहम, इसहाक, और याकूब से शपथ खाई थी।" फिर यूसुफ ने इस्राएलियों से यह कहकर कि परमेश्वर निश्चय तुम्हारी सुधि लेगा, उनको इस विषय की शपथ खिलाई, "हम तेरी हड्डियों को वहाँ से उस देश में ले जाएंगे (उत्पत्ति 50:24-25)।

यूसुफ के दिनों के उस संसार और मूसा के मूल पाठकों के संसार के मध्य में इस संदर्भ के सम्पर्क के ऊपर अधिक महत्व देना कठिन होगा। मूसा ने यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी को जो कुछ उत्पत्ति के उसके मूल पाठकों के जीवन में – प्रतिज्ञात् भूमि में उनके प्रवेश के स्पष्ट रूप से घटित होने की अपेक्षा के साथ समाप्त किया।

यूसुफ के अन्तिम शब्दों और मूल पाठकों के अनुभवों के मध्य इस सम्पर्क के उपयोगों को कई तरीकों से सारांशित किया जा सकता है। परन्तु हमारे प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए, हम दो विशेष महत्वों को देखेंगे। प्रथम, हम यह देखेंगे कि कैसे यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी मूसा के दिनों में इस्राएल के गोत्रों में जातीय एकता को बढ़ावा देने के लिए रूपरेखित की गई है। और दूसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे ये शब्द उस जातीय विवधता को स्वीकार करती है जिसे परमेश्वर ने इस्राएल के गोत्रों में नियुक्त की थी। आइए सर्वप्रथम जातीय एकता के विषय की ओर देखें।

जातीय एकता

जातीय एकता के विषय की महत्वपूर्णता को देखने के लिए, हमें इस ओर संकेत करने की आवश्यकता है कि यूसुफ और उसके परिवार की कहानी उस पद्धति से दूर चली जाती है जो उत्पत्ति में समय समय पर प्रगट होती रहती है। हम इस पद्धति को "विशिष्ठ उत्तराधिकार" कह कर पुकार सकते हैं। विशिष्ठ उत्तराधिकार से हमारा अर्थ यह है कि समय के व्यतीत होने के साथ साथ परमेश्वर की विशेष कृपा को एक मुख्य व्यक्ति या कुलपति के द्वारा पारित होना।

इस तरह से सोचें: उत्पत्ति 1:1-11:9 के आदिकालीन इतिहास में, परमेश्वर ने सबसे पहले यह नियुक्ति किया कि आदम और उसके वंशज इस पूरे संसार को भर देंगे और इसके ऊपर शासन करेंगे। उन्हें पूरी पृथ्वी पर परमेश्वर के महिमामयी राज्य का विस्तार करना था। परन्तु पाप के परिचय के साथ, यह प्रतिज्ञा केवल शेत को ही मिली और कैन को नहीं। परमेश्वर की विशेष कृपा तब शेत के वंशजों के द्वारा तब तक पारित होती रही जब तक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

परमेश्वर ने उसकी वाचा को विशेष रूप से नूह के साथ पुष्टि नहीं कर ली। नूह के तीन पुत्र, शेम, हाम और येपेत थे। परन्तु परमेश्वर की प्रतिज्ञा विशेष रूप से शेम के वंशज के द्वारा ही आगे की ओर पारित हुई। और आदिकालीन इतिहास के अन्त में, शेत का वंशज, अब्राहम, विशेष रूप से परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं का उत्तराधिकार ठहरा।

उत्पत्ति 11:10-37:11 में कुलपतीयकालीन इतिहास इस विशेष उत्तराधिकार की पद्धति को चलाए रखता है। अब्राहम की प्रतिज्ञाओं को इश्माएल और अब्राहम के अन्य पुत्रों की अपेक्षा केवल इसहाक को पारित किया गया। और परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ विशेष रूप से एसाव की अपेक्षा याकूब को ही पारित की गई हैं।

अब उत्पत्ति के पहले 36 अध्यायों विशिष्ठ उत्तराधिकार की यह पद्धति चाहे कितनी भी महत्वपूर्ण क्यों न हो, इसका आकस्मिक अन्त यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी के साथ होता है। उत्पत्ति के पहले भाग में, मूसा ने "समावेशी उत्तराधिकार" के ऊपर जोर दिया है। उसने विश्वास किया कि परमेश्वर की विशेष कृपा याकूब के सभी बारहों पुत्रों के ऊपर पारित हुई है, न कि किसी एक के ऊपर। जब याकूब की मृत्यु हुई, तो उसके पुत्रों और उसके वंशजों, इस्राएल के बारह गोत्रों, प्रतिज्ञात् भूमि में याकूब के उत्तराधिकार को इक्ट्ठा साझा किया। और याकूब के उसके सभी पुत्रों के लिए दिए हुए इस उत्तराधिकार को समावेशी वितरण कह कर मूसा ने इस्राएल को जातीय एकता की बुलाहट दी।

> **जैसा कि हम याकूब और फिर यूसुफ और उसके भाई यहूदा की कहानी को पढ़ते हैं, हम जान जाते हैं कि इस परिवार में बहुत सी अशांति, बहुत सा संघर्ष, ईर्ष्या, झगड़े हैं, और परमेश्वर नहीं चाहता कि उसकी वाचा का समाज इस तरीके से जीवन यापन करे। और इस तरह से यह कहानी, मैं सोचता हूँ कि कैसे परमेश्वर वाचा के समाज में एकता को ले आना चाहता है के विषय में एक उदाहरण बन जाती है, जब यूसुफ और यहूदा आखिरकार एक हो जाते हैं, कोई भी अब और संघर्ष नहीं रह जाता है। यह आने वाले लोगों के लिए एक अच्छा उदाहरण है । यूसुफ और यहूदा इस्राएल के गोत्रों के लिए दो मुख्य उदाहरण हैं। जिस प्रकार की एकता परमेश्वर वाचा के समाज में देखना चाहता है और जिस तरह की वह उत्पन्न करने के प्रयास कर रहा है यह उसके लिए एक अच्छा उदाहरण बन जाता। - डॉ. राबर्ट बी. चिसहोम, जूनीयर**

जैसा कि हमने पहले ही देखा था, कि यूसुफ और उसके भाइयों के मध्य में असामन्जस्यता एक दूसरे के प्रति भाइयों के द्वारा किए हुए पाप के कारण आरम्भ हुआ। परन्तु यह भाइयों के मध्य में सद्भाव देने के द्वारा अन्त हुआ। इस तरह से, मूसा की कथा ने यह स्पष्ट कर दिया कि प्रत्येक जो उसका अनुसरण कर रहा है जिसे परमेश्वर ने इस्राएल का गोत्र होने की बुलाहट दी है, को जातिए एकता की चाह करनी है। जैसा कि यूसुफ की कहानी ने प्रदर्शित किया है, पूरे इस्राएल ने प्रतिज्ञात् भूमि के उत्तराधिकार को साझा किया जिसे परमेश्वर ने अब्राहम, इसहाक और याकूब को दिया था।

इसमें कोई आश्चर्य नहीं है, तब, कि अन्य स्थानों में भी मूसा ने इस्राएल के गोत्रों के मध्य में एकता को सम्बोधित किया है। उदाहरण के लिए, निर्गमन 19:8 में, उसने जोर दिया कि सभी इस्राएली सीनै पर्वत पर परमेश्वर के साथ बान्धी हुई वाचा में सर्वसम्मति से सहमत हुए थे। गिनती 32 और यहोशू 1:12-18 में, दोनों अर्थात् मूसा और यहोशू ने जोर दिया कि इससे पहले कि उनमें से कोई भी एक दूसरे अलग होता, गोत्रों को कनान की भूमि में इक्ट्ठे युद्ध करना चाहिए। मूसा ने व्यवस्था विवरण 29:2 में सभी गोत्रों को वाचा के नवीकरण के लिए एकत्र किया।

और इससे आगे, इस्राएल की जातीय एकता के ऊपर निरन्तर पुराने नियम के उत्तरोतर लेखकों ने जोर दिया। दाऊद और सुलैमान की असफलता के बावजूद, एकीकृत राजवंश को इस्राएल के सुनहरे युग की अवधि माना जाता है। देश का उत्तरी और दक्षिणी राज्यों में विभाजन उसके लोगों के लिए परमेश्वर के आदर्श की महिमा से रहित हो गया। इसके पश्चात्, इस्राएल के भविष्द्वक्ताओं ने प्रतिज्ञाएँ की कि गोत्र बन्धवाई के पश्चात् पुन एकीकृत हो जाएंगे। और पुस्तकें जैसे इतिहास की हैं यह जोर देती हैं कि बन्धुवाई के पश्चात् प्रतिज्ञात् भूमि में प्रत्येक गोत्र के प्रतिनिधियों को बस जाना होगा।

यूसुफ और उसके भाइयों के उस संसार में बारह आदिवासी कुलपतियों के मध्य एकता के ऊपर मूसा के महत्व ने उनके संसार में इस्राएल के गोत्रों में जातीय एकता को बढ़ावा दिया। यह महत्व उन मुख्य तरीकों में से एक

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

की ओर जिसने यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी को हमारे आज के आधुनिक संसार में लागू किया जाना चाहिए संकेत करती है। ठीक वैसे ही जैसे इस्राएल के गोत्रों ने सामूहिक उत्तराधिकार को साझा किया, संसार के प्रत्येक स्थान के मसीह के अनुयायियों को भी मसीह में सामूहिक उत्तराधिकार को साझा करना चाहिए। यीशु ने इस एकता को उसके राज्य के उदघाटन के समय स्थापित किया। हमें मसीह के राज्य की चलते रहने वाली निरन्तरता का अनुसरण करना चाहिए। और हम एक दिन मसीह के राज्य की पराकाष्ठा के समय परमेश्वर के लोगों के मध्य में सिद्ध एकता और सद्भाव का हर्ष प्राप्त करेंगे। सुनिए इफिसियों 4:3-6 को, जहाँ पौलुस ऐसे कहता है कि:

> **और मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करो। एक ही देह है, और एक ही आत्मा - जैसे तुम्हें जो बुलाए गए थे अपने बुलाए जाने से एक ही आशा है - एक ही प्रभु है, एक ही विश्वास, एक ही बपतिस्मा, और सब का एक ही परमेश्वर और पिता है, जो सब के ऊपर और सब के मध्य में, और सब में है (इफिसियों 4:3-6)।**

इस संदर्भ के तर्क पर ध्यान दें। पौलुस मसीह के अनुयायियों को "मेल के बन्धन में आत्मा की एकता रखने का यत्न करने के लिए" बुलाहट देता है। इस्राएल के गोत्रों के मध्य में सांझे उत्तराधिकार की तरह ही, हम में इतना ज्यादा सामान्य बातें हैं जैसे: एक देह, एक पवित्र आत्मा, एक आशा, एक प्रभु, एक विश्वास, एक बपतिस्मा और एक परमेश्वर और एक पिता।

यूसुफ और इसके भाइयों की कहानी मसीह के अनुयायियों को आज असामन्जस्यता के ऊपर चिन्तन करने के लिए कई अवसर देती है जो कि अकसर हमारे मध्य में आ जाते हैं। और यह एक बड़ी मात्रा में व्यवहारिक मार्गदर्शन को प्रदान करती है जब हम सम्पूर्ण संसार में परमेश्वर के लोगों में एकता के लिए स्वयं को दे देते हैं।

> **यूसुफ की कहानी इस्राएलियों में जातीय एकता को उत्साहित करती है क्योंकि यूसुफ एक ऐसा व्यक्ति था जो कि क्षमा से भरा हुआ था। और क्षमा ही केवल एक ऐसा एकता ले आने वाला तथ्य है जो हमारे पास है, न केवल इस्राएलियों के लिए था, अपितु हम मसीहियों के लिए, परिवारों के लिए, उस जीवन के लिए भी है जिसे हम इस संसार में यापन करते हैं। यूसुफ के साथ उसके भाइयों ने बहुत ज्यादा दुरव्यवहार किया गया, परन्तु जब वे परेशानी में पड़े, तो उसने उन्हें बचा लिया...और जब हम यूसुफ की कहानी को देखते हैं और यह कि उसने कैसे क्षमा किया, तो उसने किसी ऐसी बात को क्षमा किया जो कि बहुत ही बड़ी थी। वह तो उसे मार देना चाहते थे। वह उसे जीवित नहीं रहने देना चाहते थे। वह उससे फिर दुबारा मिलना नहीं चाहते थे। परन्तु यूसुफ उन्हें किसी तरह का कोई नुक्सान नहीं पहुँचाना चाहता था। उसके पास सामर्थ्य थी, उसके पास ऐसा करने का प्रभाव था, परन्तु वह धर्मी बन गया और विश्वास में उनसे ज्यादा परिपक्व बन गया और उन्हें अपने में सम्मिलित कर लिया। और इसकी पुनरावृत्ति हो सकती है, और यह इस्राएल के बारह गोत्रों के मध्य में प्रतिवलित हो सकता है, यह हम में प्रतिवलित हो सकता है, हमारे परिवारों में, हमारी कलीसियाओं में, और यह हमारे समाजों में प्रतिवलित हो सकता है। - रेव्ह. डॉ. साईप्रियन के. गुच्चीन्डा**

अब, यह जानना चाहे कितना भी बहुमूल्य क्यों न हो कि मूसा ने इस्राएल की जातीय एकता के बढ़ावे के लिए विशेष महत्व दिया, यह जानकार भी महत्वपूर्ण है कि क्यों मूसा को ऐसा करने की आवश्यकता थी। संक्षेप में, मूसा ने एकता की आवश्यकता के ऊपर इसलिए जोर दिया क्योंकि परमेश्वर ने उसके लोगों के मध्य में जातीय विविधता को भी नियुक्ति किया है।

जातीय विविधता

सामान्य शब्दों में कहना, सभी आदिवासी कुलपति याकूब के उत्तराधिकारी थे, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उन सब के साथ एक जैसा ही व्यवहार किया गया। इसके विपरीत, बाकी का पुराना नियम यह स्पष्ट कर देता है कि परमेश्वर ने इस्राएल के गोत्रों को भिन्न विशेषाधिकार और उत्तरदायित्व दिए। और मूसा ने एक मुख्य मूल कारण के लिए इस्राएलियों के गोत्रों के मध्य में सद्भाव की आवश्यकता के ऊपर जोर दिया: कि इस्राएल की एकता

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

इस्राएलियों के द्वारा केवल इस बात को स्वीकार किए जाने से ही बनी रह सकती है कि परमेश्वर *स्वयं* ने उनके विविध आदिवासी विशेषाधिकार और उत्तरदायित्वों को नियुक्त किया था।

एकता के विषय की तरह ही, विविधता का विषय यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी की हर अवस्था के द्वारा अपने मार्ग को निर्मित करती है। परन्तु यह विशेष रूप से उत्पत्ति 47:28-49:33 में दिखाई देती है। इन अध्यायों में, याकूब ने अपने सभी बारहों पुत्रों को उसके उत्तराधिकार को वितरत कर दिया है, परन्तु साथ ही उसने उनमें और उनके वंशजों में स्थाई भिन्नता को स्थापित किया है।

इन अध्यायों में, मूसा ने याकूब के सभी पुत्रों में भिन्नता करते हुए इस्राएल की जातीय विविधता को बढ़ावा दिया है। परन्तु फिर भी, हमारे प्रयोजनों की प्राप्ति के लिए, हम केवल दो: यहूदा और उसके वंशज और इसमें कोई सन्देह नहीं कि, यूसुफ और उसके वंशजों को ही देखेंगे। आइए सर्वप्रथम यहूदा और उसके वंशजों को दिए हुए सम्मान के ऊपर विचार करें।

यहूदा और उसके वंशज – मूसा ने इन अध्यायों में कई बार कुलपति यहूदा को केन्द्रीय स्थान पर यह पुष्टि करने के लिए रखा है कि परमेश्वर ने यहूदा और उसके गोत्र की प्रमुखता नियुक्त किया है। यहूदा सर्वप्रथम उत्पत्ति 37:12-36 में तब प्रगट होता है जब भाइयों ने यूसुफ को मारने का प्रयास किया। वचन 26-27 में यहूदा अपने भाईयों के मध्य उच्च स्तर पर खड़ा हुआ मिलता है और यूसुफ के बदले में सफलतापूर्वक हस्तक्षेप करता है। यहूदा ने सद्भाव की पुष्टि की है जिसे भाइयों के चरित्र का गुण वचन 27 में स्मरण दिलाते हुए होना चाहिए था कि, "[यूसुफ] हमारा भाई और हमारी ही हड्डी और मांस है।" और हम यहाँ पर देखते हैं कि यहूदा के नेतृत्व को स्वीकार किया गया जब उसके भाई उसकी योजना के ऊपर सहमत हो गए।

यहूदा एक बार फिर से 38:1-30 में प्रगट होता है जब मूसा ने यहूदा के कनान में किए हुए पाप की कहानी का विवरण दिया है। यह वृतान्त यहूदा की अनैतिकता की तुलना को पोतीपर के घर में यूसुफ की निष्ठा के साथ करता है। परन्तु 38:26 में, मूसा ने यहूदा के विनम्रता से भरे हुए अंगीकार को प्रगट किया है जब यहूदा ने यह स्वीकार किया कि, "[तामार] मुझसे ज्यादा धर्मी है।" यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने यहूदा के पश्चाताप को स्वीकार किया था जब परमेश्वर ने यहूदा को दो जुड़वे पुत्रों, पेरेस और जेरह के द्वारा आशीषित किया।

मूसा ने यहूदा के नेतृत्व की ओर एक बार फिर से कुलपतियों की 44:14-34 में मिस्र में की गई दूसरी यात्रा के मध्य में ध्यानार्षित किया है। जब बिन्यामीन को चाँदी का एक कटोरा चुरा लिए जाने के लिए दोषित किया गया, यहूदा ने यूसुफ की सामने आ खड़ा हुआ और दया की याचना की। उसने बड़ी विनम्रता के साथ, अपने और अपने भाइयों को यूसुफ के "सेवकों" रूप में पुकारा। उसने जो कुछ उसने और उसके भाइयों ने किया था के ऊपर पश्चाताप को यह कहते हुए व्यक्त किया कि "परमेश्वर ने तेरे दासों के अधर्म को पकड़ लिया है।" उसने अपने पिता का सम्मान इस बात पर ध्यान देते हुए किया कि "यदि बिन्यामीन वापस कनान अपने पिता के पास नहीं पहुँचता तो किस तरह का सन्ताप [उसके] पिता के ऊपर आ पड़ेगा। और उसने बड़े साहस के साथ "लड़के के बदले" में मिस्र में रहने के लिए स्वयं को देने का प्रस्ताव दिया।

और अन्त में, 49:1-28 में, यहूदा याकूब की अन्तिम आशीषों के प्रथम पंक्ति में आया। वचन 8-12 में, याकूब ने घोषणा की कि यहूदा और उसका गोत्र नेतृत्वपन में अद्वितीय स्थान पर ऊँचा किया जाएगा। और यहूदा का गोत्र एक दिन इस्राएल का राजकीय गोत्र बन जाएगा। सुनिए याकूब के शब्दों को जो उत्पत्ति 49:8-10 में दिए हुए हैं:

> **हे यहूदा, तेरे भाई तेरा धन्यवाद करेंगे, तेरा हाथ तेरे शत्रुओं की गर्दन पर पड़ेगा; तेरे पिता के पुत्र तुझे दण्डवत् करेंगे... न तो यहूदा से राजदण्ड छूटेगा, न उसके वंश से व्यवस्था देनेवाला अलग होगा; और राज्य राज्य के लोग उसके अधीन हो जाएंगे (उत्पत्ति 49:8-10)।**

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

यहाँ पर ध्यान दें कि "यहूदा के भाई [उसका] धन्यवाद करेंगे।" वह "अपने हाथ को शत्रुओं [उन] की गर्दन पर" रखेगा, अर्थात् वह प्रत्येक के ऊपर विजय को पाएगा जो उसका विरोध करेगा। और यहूदा के "पिता के पुत्र" – उसके भाई - "उसे दण्डवत् करेंगे।" उसके पहले के चित्रण के सत्यापन में, मूसा ने संकेत दिया कि यहूदा के गोत्र का अधिकार इस्राएल के अन्य गोत्रों के ऊपर होगा।

यहाँ पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि "राजदण्ड" और "व्यवस्था देने वाला" अर्थात् शासक की लाठी, राजशाही को दिखाती है जो यहूदा के वंशज के पास होगी। यहूदा का राजकीय परिवार तब तक शासन करता रहेगा जब तक वह नहीं आ जाता जिससे यह सम्बन्धित है और राज्य राज्य के लोग की अधीनता उसकी होगी।"

उत्पत्ति 49:10 हमें पवित्रशास्त्र में इस सच्चाई का पहला स्पष्ट संदर्भ देती है कि यहूदा का एक वंशज सम्पूर्ण संसार के ऊपर राजा बन जाएगा। यह दाऊद के घराने से मसीह के आने का स्पष्ट उद्धरण है। और यह भविष्य का राजा उत्पत्ति 12:3 में दी हुई प्रतिज्ञा को पूरा करेगा कि, "तेरे द्वारा पृथ्वी के सभी लोग आशीष पाएँगे।" इसी राजा के द्वारा, परमेश्वर का राज्य सम्पूर्ण संसार तक पहुँच जाएँगा। और "राज्यों की अधीनता" यहूदा से निकलने वाले इस महान् राजा को दी जाएगी।

इसे समझना कठिन नहीं है कि क्यों मूसा ने अतीत के उस संसार के यहूदा की प्रशंसा उसके मूल पाठकों के वर्तमान के उनके संसार के लिए जोर देकर की है। यहूदा याकूब का पहिलौठा पुत्र नहीं था, और सामान्य रूप से उसे इस तरह की प्रमुखता नहीं मिलना चाहिए। इसलिए, जब मूसा ने यूसुफ और उसके भाइयों को जातीय एकता के प्रति बढ़ावा देने के लिए लिखा, उसने साथ उन्हें इस एकता को इस सच्चाई के प्रकाश में बनाए रखने की अपेक्षा की कि परमेश्वर ने यहूदा को इस तरीके से ऊँचे पर उठाया था।

आज के हमारे संसार में मसीह के आधुनिक अनुयायियों के लिए इसी के साथ यहूदा के ऊँचे पर उठाए जाने के निहितार्थ हैं। परन्तु इन सभी सच्चाइयों के केन्द्र में तथ्य यह है कि परमेश्वर ने एक सर्वोच्च राजा की प्रतिज्ञा यहूदा के गोत्र से निकल कर आने के लिए की। और यह प्रतिज्ञा दाऊद के सिद्ध धर्मी पुत्र, यीशु, ब्रह्माण्ड के राजा में पूरी हुई। यीशु ने उसके सिंहासन को उसके राज्य के उदघाटन के समय में धारण किया। वह उसके राज्य की चलते रहने वाली निरन्तरता में शासन तब तक करता रहेगा जब तक उसके शत्रु उसके पाँवों के अधीन नहीं हो जाते। और उसके राज्य की पराकाष्ठा के समय, वह सदैव के लिए नई सृष्टि के ऊपर राज्य करेगा।

यह देख लेने के पश्चात् कि कैसे मूसा ने इस्राएल के भीतर जातीय विविधता के ऊपर जोर यहूदा और उसके वंशज के ऊपर ध्यान केन्द्रित करते हुए किया, आइए हम उत्पत्ति के इस भाग में यूसुफ और उसके वंशजों के स्पष्ट दिखाई देने वाली प्रमुखता की ओर मुड़ें।

यूसुफ और उसके वंशज – जैसा कि हमने देखा, यूसुफ उत्पत्ति 37:2-50:26 में मुख्य चरित्र है। परन्तु, अपने भाइयों के विपरीत, यूसुफ को इन अध्यायों में बहुत उच्चतम रूप में आदर्श के रूप में दिखाया गया है। सच्चाई तो यह है, कि केवल एक ही बार मूसा ने यूसुफ के चरित्र में दोष को अपने आरम्भिक वृतान्त में संकेत दिया है। 37:2-11 में, हम सीखते हैं कि यूसुफ ने उसके भाइयों को क्रोधित किया। वह अपने पिता के पास उनके बारे में बुरे समाचार को लेकर आया और उनसे भविष्य के प्रति अपने स्वप्न के बारे में घमण्ड प्रगट किया। परन्तु यह नकारात्मक गुण एक छोटी सी बात है। और मूसा ने वचन 2 में यूसुफ को केवल "सत्रह वर्ष" का कहते हुए उल्लेख करके इसके महत्व को कम कर दिया है।

इस अपूर्णता के संकेत को छोड़कर, यूसुफ का चित्र पूरी तरह से सकारात्मक है। यूसुफ ने पोतीपर की सेवा विश्वासयोग्यता से की। उसने पोतीपर की पत्नी का विरोध किया। वह फिरौन के प्रति अपनी सेवकाई में दोषरहित रहा। उसने बड़ी बुद्धिमानी के साथ अपने भाइयों के साथ व्यवहार किया जब वे उसके पास आए। वह उनके प्रति दयालु बना रहा यहाँ तक कि उनके द्वारा बुराई किए जाने पर भी जो उन्होंने उसके साथ की थी। उसने अपने पिता और बिन्यामीन को प्रेम दिखाया। उनसे मिस्र के अगुवा होने के नाते बहुत सी जातियों को आशीषित किया। इस

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

और कई अन्य तरीकों से, मूसा ने यूसुफ के चित्र को इस रीति से प्रस्तुत किया जैसे याकूब ने उसे उत्पत्ति 49:26 में दिखाया था। यूसुफ अपने "भाइयों के मध्य राजकुमार" था।

अब अधिक यथार्थवादी रूप में, हम सभी हमारे सामान्य अनुभव से जानते हैं कि यूसुफ ने अपने जीवन में कई बार पाप किया होगा। यह यीशु को छोड़कर प्रत्येक युग, के प्रत्येक व्यक्ति के साथ सत्य है। इसलिए, क्यों मूसा ने यूसुफ को इस तरीके से एक आदर्श के रूप में रखा? उसका इसके पीछे क्या उद्देश्य था? उत्तर इस सच्चाई में है कि परमेश्वर ने यूसुफ और उसके वंशजों को इस्राएल के गोत्रों के मध्य में विशेष प्रमुखता दी थी।

यूसुफ और उसके वंशजों के प्रमुखता सबसे पहले यूसुफ के पुत्रों के लिए उत्पत्ति 48:1-22 में किए हुए प्रबन्धों में दिखाई देती है। इन वचनों में, याकूब ने यूसुफ के पुत्रों, एप्रैम और मनश्शे को आशीषित किया ऐसा की मानो वे उसके अपने पुत्र थे। 1 इतिहास 5:1 के अनुसार, रूबेन ने अपने पहिलौठे होने के पद को कौटम्बिक व्यभिचार करने के द्वारा खो दिया था। इसलिए, जब याकूब ने एप्रैम और मनश्शे को अपने पुत्रों जैसा ही गोद ले लिया, इसका अर्थ यह है कि यूसुफ ने याकूब के पहिलौठे होने की दोगुणी आशीषों को प्राप्त किया।

इन प्रबन्धों में से सबसे आकर्षक खण्डों में से एक 48:13-20 में प्रगट होते हैं जहाँ पर याकूब एप्रैम और मनश्शे को आशीषित करता है। यूसुफ बड़ी सावधानी से याकूब के सामने अपने पुत्रों को लाता है ताकि याकूब अपने दाहिने हाथ को, महान् आशीषों के हाथ को, मनश्शे के सिर के ऊपर रखे। फिर याकूब ने बाएँ हाथ को उठाया, कम आशीष के हाथ को, जो एप्रैम के सिर के ऊपर रखा गया। इस तरह के प्रबन्ध को किए जाना उचित जान पड़ता है क्योंकि मनश्शे यूसुफ का जेठा पुत्र था। परन्तु बिना किसी विवरण को दिए, याकूब ने अपने हाथ को इस तरह से आगे बढाया कि उसका बायाँ हाथ मनश्शे के ऊपर और दायाँ हाथ एप्रैम के सिर के ऊपर चला गया। यूसुफ इससे अप्रसन्न हुआ और उनके याकूब के हाथ को मनश्शे के सिर के ऊपर रखने का प्रयास किया। परन्तु सुनिए उत्पत्ति 48:19 में क्या कुछ घटित हुआ है:

> **उसके पिता ने कहा, "नहीं; सुन, हे मेरे पुत्र, मैं इस बात को भली भाँति जानता हूँ : यद्यपि इस से भी मनुष्यों की एक मण्डली उत्पन्न होगी, और यह भी महान् हो जाएगा, तौभी इसका छोटा भाई [एप्रैम] इस से अधिक महान् हो जाएगा, और उसके वंश से बहुत सी जातियाँ निकलेंगी" (उत्पत्ति 48:19)।**

और जैसा कि यह कहता है किस "उसके वंश से बहुत सी जातियाँ निकलेंगी।" गिनती 2:18-21और व्यवस्था विवरण 33:17 जैसे संदर्भ संकेत देते हैं कि एप्रैम मनश्शे के अपेक्षा गिनती में बहुत ज्यादा और प्रमुख हो गया था। सच्चाई तो यह है, कि एप्रैम की प्रधानता इतना ज्यादा थी, कि बाद में जब राजवंश विभाजित हुआ, तो पूरे उत्तरी इस्राएल को अक्सर "एप्रैम" कह कर पुकारा जाता था।

अब, हो सकता है कि यह सब कुछ मसीह के आधुनिक अनुयायियों को अप्रासंगिक लगता हो। परन्तु उस समय के संसार में यूसुफ और उसके भाइयों में एप्रैम को दी हुई अप्रत्याशित प्रमुखता का संकेत परमेश्वर की ओर से नियुक्त प्रबन्ध की ओर पाया जाता है जो कि विशेष रूप से मूसा के मूल पाठकों को उनके संसार के लिए महत्वपूर्ण थी। जब मूसा ने उत्पत्ति की पहली पुस्तक को लिखा, वह यहोशू को इस जाति का अगुवा ठहराने के लिए, अपने उत्तराधिकारी के रूप में अधिकार देने पर था। परन्तु यहोशू मूसा और हारून की तरह लेवी गोत्र में से नहीं था। वह यहूदा के राजकीय गोत्र में से नहीं था। नहीं, यहोशू एप्रैम के गोत्र में से था, ऐसे गोत्र से जिसे परमेश्वर ने अन्य सभों के ऊपर प्रमुख होने की आशीष दी थी। कुल मिलाकर, मूसा इस विवरण में एप्रैम को अपने उत्तराधिकारी के चुनाव की वैधता के लिए बढ़ता हुआ देखता है। यह केवल यहोशू की मृत्यु के पश्चात् संभव हुआ कि यहूदा का गोत्र प्रमुखता के साथ उठा। यहोशू, जो कि एप्रैमी था, सम्पूर्ण जाति को प्रतिज्ञात् भूमि में बसने के लिए नेतृत्व प्रदान करेगा।

मसीह के आधुनिक अनुयायी होने के नाते, यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी का यह आयाम, हमें विविध आशीषों और भूमिकाओं की पहचान करने के लिए बुलाहट देता है जिसे परमेश्वर ने हमारे संसार के लिए नियुक्त किया है। उसके राज्य के उदघाटन में, यीशु ने उसके लोगों को विभिन्न वरदानों के साथ आशीषित किया। उसने कुछ को प्रेरित, कुछ को भविष्यद्वक्ता, कुछ शिक्षक और कुछ को अन्य किसी रूप में बनाया। उसने विभिन्न लोगों को

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम

भिन्न तरह के विशेषाधिकार और उत्तरदायित्व के साथ बुलाहट दी है। मसीह ने इस विविधता को स्थापित किया है, अपने लोगों को टुकड़ों में बाँटने के लिए नहीं, अपितु उन्हें एक दूसरे के साथ बान्धने के लिए ऐसा किया है। और मसीह के राज्य की चलते रहने वाली निरन्तरता के मध्य में, पवित्र आत्मा जिसे जैसे चाहता है उस पर वैसा ही वरदान को उंडेल देता है। और यहाँ कि पराकाष्ठा के समय, हम विविधता को उन तरीकों के साथ देखेंगे जिनमें परमेश्वर उन्हें सम्मान देता है जिन्होंने मसीह का अनुसरण किया है। जब हम यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी को हमारे अपने संसार में लागू करते हैं, तो हमें विविधता के मूल्य को मानते और स्वीकार करते हैं कि परमेश्वर ने उसके लोगों को प्रत्येक युग के लिए ठहराया है।

सारांश

यूसुफ और उसके भाइयों के ऊपर इस अध्याय में, हमने उत्पत्ति की पुस्तक के अन्तिम मुख्य भाग की सरंचना और विषय वस्तु को देखा। और हमने देखा कि कैसे मूसा ने इन अध्यायों के मुख्य विषयों का उपयोग, जिसमें वे भी सम्मिलित हैं जो कि उत्पत्ति के पहले के अध्यायों में प्रगट होते हैं, और इस्राएल की जाति की एकता और विविधता के ऊपर इन अध्यायो में मूसा के द्वारा दिए हुए विशेष महत्व को देखा है।

यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी यह प्रगट करती है कि इस्राएल के कुलपतियों के लिए एक दूसरे के साथ शान्ति के साथ रहना कितना कठिन था। परन्तु अन्त में, परमेश्वर उनमें स्थाई बन्धन को स्थापित करता है। असामन्जस्यता, मेल-मिलाप और सद्भाव की यह कहानी वास्तव में इस्राएल के बारह गोत्रों को उनके दिनों में परमेश्वर के लोगों के रूप में पश्चाताप करने और एकता में के लिए बुलाहट देती है। और यह आज भी हमें विभाजनों के होने से रोकने और प्रेम के बन्धन को बढ़ावा देने के लिए बुलाहट देती है जो कि हमार मध्य में मसीह के अनुयायी होने के नाते विद्यमान हैं। मसीह की देह होने के नाते, हम मसीह के उत्तराधिकार को साझा करेंगे। और यूसुफ और उसके भाइयों की कहानी हमें अनिवार्य मार्गदर्शन का प्रस्ताव देती है कि कैसे हमें आज परमेश्वर के लोगों में एकता ले आने के लिए सम्पूर्ण संसार में उसके महिमामयी राज्य के कारण स्वयं समर्पित करना है।

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट में जायें - थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ ऐट थर्ड मिलेनियम